RAJBIL26868/2016/1284525

वर्ष 3 अंक 10 मूल्य 20

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

राजसमंद के प्रबुद्ध पाठक वर्ग की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

स्वतंत्रता दिवस पर सभी पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएं

हिन्दी मासिक पत्रिका

अगस्त 2020

पेज संख्या : 36 राजसमंद

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel
Jaivardhan News

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

#राजस्थान_सतर्क_है

"जीवन के साथ आजीविका भी चल सके इसलिए अनलॉक जरूरी है। हमारी छोटी सी लापरवाही कोरोना संक्रमण बढ़ा सकती है। कोरोना से घबराएं नहीं, सभी सावधानियों का पालन करें। सरकार कोरोना को हराने के लिए प्रतिबद्ध है।"

अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री

कोरोना महामारी से जीवन रक्षा के लिए

क्या करें ✓	क्या नहीं करें ✗
साबुन से बार-बार हाथ धोएं	सोशल मीडिया के भ्रामक संदेशों पर ध्यान न दें
बाहर निकलें तो मास्क जरूर पहनें	हाथ नहीं मिलाएं, नमस्ते अपनाएं
बुखार/खांसी/सांस की तकलीफ पर अस्पताल जाएं	अनावश्यक यात्रा नहीं करें
एक-दूसरे से 2 गज दूरी बनाएं रखें	सार्वजनिक स्थानों पर नहीं थूकें
रोगी एवं जरूरतमंदों की सहायता करें	भीड़ व समारोह से बचें
होम/संस्थागत क्वारंटीन सलाह का पालन करें	बुजुर्ग/बच्चे/गर्भवती/गंभीर रोगी घर से न निकलें

कोरोना खत्म नहीं हुआ है – बचाव के लिए आपकी सावधानी व सहयोग जरूरी है

राजस्थान मेडिकल रिलीफ सोसायटी, केलवा राजसमंद

जयवर्द्धन

सम्पादक एवं प्रकाशक
ललिता राठौड़
निदेशक व उप सम्पादक
विजय शर्मा,
लक्ष्मणसिंह राठौड़
सह सम्पादक
हितेन्द्रसिंह चौहान
सम्पादन सहयोगी
सूर्यप्रकाश दीक्षित
विज्ञापन प्रबंधक
जितेन्द्र शर्मा, गणपतसिंह
वितरण विभाग
नारायण पालीवाल, सुधीर दवे

कार्यालय पता
C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट
कांकरोली, जिला राजसमंद
मो. 94142-39648, 96729-80901

सम्पादक, प्रकाशन एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद्र आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स, हस्तिनापुर कांकरोली, जिला राजसमंद (राजस्थान) से मुद्रित

नोट : पुस्तक में प्रकाशित सामग्री में यथासंभव सावधानी बरती गई है। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद्। पत्रिका में प्रकाशित आलेख में लेखकों के अपने निजी विचार है। किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

जयवर्द्धन पत्रिका की वार्षिक सदस्यता का शुल्क मात्र 200 रुपए

सम्पादकीय

स्वतंत्रता जन्मसिद्ध अधिकार है

हमने आजादी को जाना है, किन्तु माना नहीं। पुस्तकों में लिखे- पढ़े गए शब्दों को हमने कंठस्थ कर रखे हैं, जिन्हें वक्त-बेवक्त प्रतिष्ठानों, संस्थाओं एवं कार्यालयों पर राष्ट्रीय ध्वज फहरा कर दोहरा लेते हैं और पुन: सहेजकर अगले स्वतंत्रता दिवस तथा गणतंत्र दिवस तक खूंटी टंगे रिश्तो की तरह सुरक्षित टांग देते हैं।

परमात्मा ने पूरी सृष्टि को अपनी स्वतंत्र इच्छा शक्ति से प्रकट की है और चर अचर सभी को बंधन रहित मर्यादित उसूलों से सदियों से चला रहा है। हम सोचते हैं कि हमने कानून बनाकर गुलामी से मुक्ति पा ली है। कहां हुए मुक्त ? उन कानूनों की श्रृंखला से तो हम अपने आपको मानसिक गुलामी की जंजीरों में अधिक झकड़ गए हैं।

पशु- पक्षियों व प्रकृति को कौनसे कानून चला रहे हैं। उनसे एक क्षण भी अपराध नहीं होता और हम समझदार इतने बन गए कि हमें कदम कदम पर सोचना पड़ता है कि अमुक कार्य न्यायोचित है या नहीं।

बचपन यह नहीं सोचता, जन्म, मरण और प्रणय किसी कानून को नहीं मानते, तो फिर इस आजादी से क्या मिला ? हमने अपने को बुद्धि के बंधन से गुलाम बना रखा है। आजादी का अर्थ तो जीओ और जीने दो का सहज सिद्धांत है, जो प्रकृति प्रदत्त है। आज मेवाड़ में सबसे अधिक स्वतंत्रता सेनानियों की सूची है, किन्तु उन्हें त्याग का प्रतिफल क्या मिला ? उनके परिवार वाले, बच्चों की परवरिश के लाले पड़ रहे हैं।

अत: सच्चे मायने में आजादी के महत्त्व को महसूस करने की राष्ट्रनेताओं व जनसेवकों को जरूरत है, नहीं तो आने वाली नस्ले हमें सुभाषचंद्र बोस के बोलो का जवाब मांगने पर निरुत्तर कर देगी। उन्होंने कहा था, तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा और आज का नेता कहता है कि तुम मुझे वोट दो, मैं तुम्हें मानसिक गुलामी दूंगा, बेकारी व गरीबी दूंगा और हर राष्ट्रीय पर्व पर मुंगेरीलाल के हंसीन सपने दिखाता रहूंगा।

फतहलाल गुर्जर 'अनोखा'
वरिष्ठ साहित्यकार
मंदिर मार्ग, कांकरोली
मो. 99286-25757

इस अंक में खास...

1. **कवर स्टोरी 1 :** शहीदों की जंग सीमा पर, वारिसों की ऑफिसों से — पेज- 4
2. **कवर स्टोरी 2 :** शहीद के परिजनों को जमीन मिली 600 किमी. दूर — पेज - 5
3. **गुमनाम शख्सियत :** शारीरिक शिक्षिका संतोष पूर्बिया — पेज- 8
4. **राजप्रशस्ति महाकाव्य :** त्रयोदस सर्ग — पेज- 11
5. **जीवन की पाठशाला :** अनमोल रिश्ता है दोस्ती — पेज - 12
6. **लघुकथा- कविता :** भेदभाव और मजदूर — पेज - 13
7. **प्रेरणा पुरुष :** पद्मश्री डॉ. टीके लाहिड़ी — पेज - 14
8. **तीखी मिर्ची :** हम स्वतंत्र है या आजाद ? — पेज - 16
9. **कविताएं :** 1 पत्नी बड़ी अजीब होती है 2 मिले थे जब तुम 3 कोरोना — पेज- 17
10. **मेरा गांव, मेरे लोग :** श्री नारायण नारायण — पेज - 18
11. **माटी का लाल :** श्री नरेन्द्र पालीवाल, कांकरोली — पेज - 20
12. **राजस्थानी केणावतां** — पेज- 23
13. **राइजिंग अवेयरनेस** — पेज - 24
14. **व्यंग्य :** मौसमे एडमिशन — पेज - 26
15. **हास्य व्यंग्य :** लॉकडाउन के साइड इफैक्ट — पेज - 28
16. **टेक्नीकल विंडो :** जीयो ग्लास — पेज - 32

शहीदों की जंग सीमा पर, वारिसों की जंग ऑफिस दर ऑफिस

देश हमारे लिए सर्वोपरि है। देश है तो हम है। हमें हमारे देश के लिए सर्वस्व अर्पण कर देने का भाव रखना चाहिए। सीमाओं पर हमारे सुरक्षा प्रहरी अंगार उगलती गर्मी और कंपकम्पाती सर्दी में भी रातभर जगकर देश को चैन की नींद मुहैया कराते हैं। दुश्मनों की गोलियों के सामने अपने सीने को ढाल बनाकर देश की सुरक्षा के लिए हमारे सैनिक हंसते हंसते अपने जीवन तक का हवन कर देते हैं, मगर देश के लिए अपने जीवन त्यागने वाले शहीदों को आखिर यह देश क्या देता है?

शहीद का जब पार्थिव शरीर गांव में आता है, तो देश भक्ति मय वातावरण में शहीद के परिवार के प्रति हर कोई भाव विभोर हो जाता है, मगर सीमा पर जंग लड़ने वाले सैनिक के शहीद हो जाने पर अक्सर उसके परिजनों को अपनी शेष जिन्दगी की जंग बड़ी मुश्किल के साथ लड़नी पड़ती है। शहीद की चिताओं पर चंद आंसू बहाकर संवेदनाओं के दो शब्द बोलने भर से उसके परिवार का गुजारा नहीं हो सकता है। घर के मुखिया के चले जाने के बाद परिजन दर दर की ठोकरे खाने को मोहताज हो जाते हैं। सरकार से मिलने वाली मदद के लिए परिजन ऑफिस दर ऑफिस भटकते रहते हैं।

राजसमन्द के मगरा क्षेत्र की धरती बड़ी उर्वरा है। यहां रणबांकरों की फसल तैयार होती है, जो देश की सीमाओं पर अपनी जान की बाजी लगाने को सदैव उत्सुक रहती है।

शहीद के वारिस सुविधा को मोहताज

अरुणाचल प्रदेश में करीब 30 वर्ष पहले हुए नेफा-3 ऑपरेशन में शहीद हुए देवीसिंह राजपूत के परिजन आज भी पेंशन के अलावा अन्य कोई सरकारी सुविधाएं परिजनों को नहीं मिल पाई। जब यह जांबाज देवीसिंह शहीद हुए,तो तीन दिन बाद देहांत होने का तार आया था, मगर तब भी परिजनों को मौत का विश्वास नहीं हुआ। फिर 15 दिन जब सेना के जवान शहीद की खबर के साथ उसकी वर्दी, बैग व अन्य दस्तावेज लेकर समीचा पहुंचे, तो पता चला। उस वक्त शहीद की पार्थिव शरीर भी यहां नहीं पहुंचा था। उसके बाद सरकारी सुविधा के नाम पर शहीद की वीरांगना को पेंशन जरूर मिलने लगी, मगर न तो मृतक आश्रित परिवार के किसी सदस्य को सरकारी नौकरी मिली और न ही जमीन, पेट्रोल पम्प सरीखी कोई सुविधाएं मिल पाई। खास बात यह है कि नेफा-3 ऑपरेशन में दुश्मनों से लोहा लेते हुए जान न्यौछावर करने के बाद भी उन्हें शहीद दर्जा तक सरकार की तरफ से नहीं मिला। ऐसे में देवीसिंह की शहादत गुमनाम के अंधकार में दफन होकर रह गई और परिजन आज भी सरकारी सुविधाओं के लिए दर दर की ठोकरे खाने को मजबूर हैं।

शहीद देवीसिंह राजपूत और वीरांगना शांताबाई

जानकारी के अनुसार हाजेला का वास,समीचा में वर्ष 1960 में जन्म लेने वाले देवीसिंह पुत्र भूरसिंह राजपूत की करीब वर्ष 1980 में बीएसएफ में ग्रेनेडियर पद पर नौकरी लगी। करीब 11 वर्ष की नौकरी के बाद उनका जीआरपी जबलपुर के अंतर्गत अरुणाचल प्रदेश में नेफा-3 ऑपरेशन में ड्यूटी लगी, जिसमें 26 अप्रैल 1991 को शहीद हो गए। उसके बाद उनकी पत्नी वीरांगना शांताबाई को पेंशन जरूर मिल रही है, मगर अन्य कोई सरकारी सुविधाएं नहीं मिल पाई। शहीद का एक बेटा हिम्मतसिंह राजपूत है, जबकि दूसरा महेंद्रसिंह। बड़ा बेटा अल्पशिक्षित होने व भोलेपन की वजह से कोई भी कार्य करने की स्थिति में नहीं है। इसके अलावा महेंद्रसिंह ने जबलपुर जाकर मृतक आश्रित नौकरी प्राप्त करने के प्रयास भी किए, मगर उसके जन्म दिनांक में तकनीकी त्रुटि के चलते अब तक उसे नौकरी नहीं मिल पाई। अब महेंद्रसिंह उदयपुर के सायरा में एक मोबाइल शॉप पर नौकरी कर घर गुजारा चला रहा है। इस शहीद के नाम पर न किसी स्कूल का नामकरण हुआ और न ही किसी चौराहे पर इस शहीद का स्टैचू लग पाया। इस तरह न राजसमंद जिला, बल्कि कुंभलगढ़ उपखंड क्षेत्र के समीचा गांव तक भी शहीद की शहादत से अनभिज्ञ है।

शहीद के परिजनों को जमीन मिली 600 किमी. दूर, स्कूल नामकरण भी नहीं

भारत और पाकिस्तान के बीच कारगिल युद्ध से पूर्व ऑपरेशन रक्षक के दौरान शहीद हुए गजपुर पंचायत के सिसोदियो का गुड़ा के नोहरा निवासी रतनसिंह सोलंकी के परिजनों को ऑफिस दर ऑफिस भटकने के बाद अब राजसमंद से करीब 600 किमी. दूर जैसलमेर में जमीन मिली है। वह भी रेतीले टीलों में अनुपजाऊ जमीन आवंटित हुई है, जिसका उन्हें कोई सरोकार नहीं है। साथ ही शहीद के नाम स्कूल व चौराहे का नाम करने के प्रयास भी परिजनों किए, मगर ग्राम पंचायत गजपुर से लेकर माध्यमिक शिक्षा विभाग और जिला प्रशासन तक ने कोई ध्यान नहीं दिया।

शहीद रतनसिंह व वीरांगना पुष्पादेवी

जानकारी अनुसार 1 जनवरी 1965 को जन्मे रतनसिंह सोलंकी ने दसवीं की पढ़ाई कर 26 जून 1982 को उदयपुर में सेना में भर्ती हो गए। 1998 में पाकिस्तान आए दिन भारतीय सीमा पर घुसपैठ करता जा रहा था। इस पर भारतीय सेना द्वारा ऑपरेशन रक्षक के तहत अभियान शुरू किया, जिसमें 20 अगस्त 1998 को रतनसिंह कारगिल क्षेत्र में शहीद हो गए। बाद में दिसम्बर 1998 से भारत- पाकिस्तान के बीच खुलकर युद्ध हुआ, जिसे बाद में कारगिल युद्ध का नाम दिया गया। रतनसिंह के शहीद होने के बाद वीरांगना पुष्पादेवी को पेंशन शुरू हो गई, मगर तब उनके 4 बच्चों में दो बेटियां 13 व 9 वर्ष की थी तथा दो बेटे 6 व 3 वर्ष के थे। पति का असमय चला जाना वीरांगना के लिए बड़ा मुसीबतभरा रहा, जिसके लिए चार बच्चों का पालन पोषण कर बड़ा करना चुनौतीपूर्ण रहा। फिर बड़े बेटे करणसिंह को मृतक आश्रित के तहत नौकरी मिली। शहीद रतनसिंह के नाम विद्यालय के नामकरण के लिए जिला प्रशासन को कई बार अर्जी लगाई, लेकिन कोई ठोस कार्रवाई नहीं हो पाई।

21 साल की जंग के बाद मिली जमीन, वह भी जैसलमेर में

शहीद रतनसिंह के आश्रितों को मिलने वाली 25 जमीन के लिए भी उन्हें 21 साल तक की लंबी लड़ाई लड़नी पड़ी। सर्वप्रथम जिला कलक्टर राजसमंद के यहां आवेदन किया, तो परिजनों को ही 25 बीघा एक साथ एक ही जगह तलाशने के लिए कहा, मगर परिजन नहीं ढूंढ पाए। फिर विभाग पत्र भेजा, तो शहीद के लिए बीकानेर जिले में जमीन आवंटित कर दी, जिसका कब्जा लेने शहीद का परिवार पहुंचा, तो पता चला कि वह जमीन पहले से किसी अन्य व्यक्ति के नाम पर भी आवंटित है। फिर वह आवंटन निरस्त करवाकर पुन: कार्रवाई की, तो लंबे संघर्ष के बाद 2019 में जैसलमेर जिले में करीब सौ किमी. दूर रेतीले टीलों के बीच आवंटित हुई और वह भी अनुपजाऊ है।

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
सम्पर्क : 94142-39648

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

शहीद के बेटे को नौकरी भी नहीं

देश की सीमा सुरक्षा के लिए कश्मीर के कुपवाड़ा में शहीद हुए प्रभुलाल कलाल के परिजनों को 25 साल बाद भी परिलाभ नहीं मिल पाए हैं। शहीद के बेटे को न तो मृतक आश्रित के तहत सरकारी नौकरी मिल पाई है और न ही पेट्रोल पम्प एवं जमीन ही आवंटित हुई। देश के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर देने वाले शहीद के परिवार को लेकर न तो क्षेत्रीय जनप्रतिनिधियों ने कोई ध्यान दिया और न ही प्रशासन गंभीर है। इसका खमियाजा शहीद के परिजनों को आज तक भुगतना पड़ रहा है।

जानकारी के अनुसार भीम तहसील के कुकड़ा निवासी प्रभुलाल कलाल बीएसएफ जबलपुर के तहत कश्मीर के कुपवाड़ा में तैनात थे। सीमा पर जंग के दौरान प्रभुलाल कलाल 6 जुलाई 1995 को शहीद हो गए, लेकिन सरकार द्वारा अब तक उसे शहीद का दर्जा तक नहीं दिया गया। उनकी पत्नी वीरांगना सूरज देवी को पेंशन जरूर मिल रही है। उनके बेटे ने मृतक आश्रित के तहत सरकारी नौकरी के लिए आवेदन भी किया, मगर बीएसएफ मुख्यालय जबलपुर तक की भागदौड़ के बावजूद उसके दस्तावेजों में पहचान को लेकर तकनीकी खामियों के चलते उसे मृतक आश्रित की नौकरी भी नहीं मिल पाई। ऐसे में स्नातक तक पढ़ाई करने के बाद भी शहीद का बेटा महावीर कलाल एक मोटर पार्ट्स की दुकान पर मजदूर कर गुजारा चला रहा है।

जांबाज बंशीलाल की शौर्यगाथा

जांबाज कमांडेट श्री बंशीलाल व वीरता पदक

मंगरा अंचल में जन्मे हर वर्ग के युवा में भारतीय सेना में जाने का जुनून होता है और वहां जाकर अपने शौर्य प्रदर्शन करने की होड़ में रहते हैं। प्रस्तुत है, कामलीघाट देवगढ़ के कमांडेट केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के श्री बंशीलाल रेगर की शौर्यगाथा। उन्हें राष्ट्रपति द्वारा वीरता मैडल से नवाजा गया। श्री रेगर 185वीं सीआरपीएफ की बटालियन में सहायक कमांडेंट पद पर होकर जम्मू कश्मीर के पुलवामा में तैनात थे। दिनांक 27 फरवरी 2017 को रात होते होते सूचना मिली कि गांव मौमिनाबाद में कुछ आतंकवादी एक घर में छुपे हुए हैं। श्री रेगर ने अपनी टीम के साथ उस घर की घेराबंदी की। फिर आतंकवादियों ने भनक लगते ही टीम पर गोलीबारी शुरू कर दी। इस पर श्री रेगर ने तीन जवानों के साथ मौर्चे पर जवाबी गोलीबारी शुरू की और सामरिक पोजीशन लेते हुए अपने प्राणों की की परवाह किए बिना आगे बढ़ते गए। कुछ देर में आतंकवादियों की गोलीबारी थम गई। एक आतंकवादी घर की खिड़की से कूद कर पुन: टीम पर फायरिंग करते हुए भागने लगा, तो उसे भी श्री रेगर की गोलियों ने ढेर कर दिया। करीब आधे घंटे की मुठभेड़ में समाप्त होने के बाद हिजबुल के दो कुख्यात आतंकी शबीर अहमद व इदरीस अहमद के शव एवं उनकी दो एके 47 राइफल, छह मैग्जीन, 80 जिंदा कारतूस मिले। इस मुठभेड़ में सहायक कमांडेंट श्री बंशीलाल, सिपाही बिलाल अहमद गनी, अमित चटर्जी, सन्नी कुमार को अदम्य साहस, पहल और असाधारण सुझबुझ करने पर वीरता व शौर्य के लिए 13 अप्रैल 2017 को तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी द्वारा वीरता पुलिस पदक प्रदान किया गया।

चंदनसिंह छापली
सेवानिवृत पुलिस अधिकारी

Let Us Help Your Business
GROW
अपने बिजनेस
को दें
बुलन्दियां
सस्ती दरों पर
जयवर्द्धन
पत्रिका में
विज्ञापन
प्रकाशित कराएं।
Advertise
With
Us!
AFFORDABLE, TARGETED, NOW!
स्पेशल ऑफर
विज्ञापन साइज
5 X 8 CM
सिर्फ
₹1000/-
सम्पर्क
शक्ति एडवरटाइजिंग
C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 9649813798
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

राजसमंद में महिला हॉकी का मील का पत्थर संतोष पूर्बिया

राजसमंद की धरती ने कई ऐसे कोहिनूर हीरो को जन्म दिया है, जिन्होंने अपनी चमक से सदैव दूसरों को रोशन किया है। उन्होंने अपनी आभा से सबको सुशोभित किया है। यह सदैव सोने की तरह आग में तपते रहे और तपकर जब कुंदन बने, तो किसी और के लिए आज हम आपके समक्ष राजसमंद के काकरोली की एक ऐसी गुमनाम शख्सियत को लेकर आए हैं, जिन्होंने खुद को तराशा तो है ही, लेकिन उन्होंने कई ऐसे बेजोड़ नगीनों को भी तैयार किया है, जो आज हमारी इस सृष्टि को रोशन किए हुए हैं। हां हम बात कर रहे हैं काकरोली मैं रहने वाली शारीरिक शिक्षक संतोष पूर्बिया की, जिनके हौंसले की सच्ची कहानी आज खेल प्रेमियों के लिए मील का पत्थर साबित हो रही है। एक साधारण से किसान परिवार में माता सुंदर बाई और पिता सुंदरलाल की दूसरे संतान के रूप में 25 दिसंबर 1958 को कांकरोली मे संतोष का जन्म हुआ। पिता सरकारी स्कूल में अध्यापक थे, लेकिन उस वक्त तनख्वाह के नाम पर बहुत कम पैसे घर में आते थे। उससे घर गुजारा मुश्किल से चलता था। ऐसे में माता खेतीबाड़ी करके कुछ जुगाड़ कर लेती थी।

घर में ही कुछ पशुओं से दूध भी प्राप्त हो जाता, उससे भी घर को सहारा मिल जाता था, परिवार में माता- पिता के अलावा संतोष के तीन और भाई बहन थे। मां और पिता ने कभी अपनी संतानों के बीच लड़के लड़की में फर्क नहीं रखा और संतोष का दाखिला सरकारी स्कूल में करा दिया। जब संतोष छठीं क्लास में आई थी, तब उनके गुरू श्री गोपालजी गौरवा और श्री मुरलीधरजी लड्ढा ने उसके हाथ में हॉकी स्टिक थमा दी। संतोष शुरू से ही हॉकी में तेज तर्रार थी, उसने अपने गुरू के सानिध्य में रहते हुए छोटी उम्र में ही हॉकी के कई गुर सिख लिए निरंतर स्कूली टूर्नामेंट में उसका चयन होता रहा और उसमें और भी निखार आने लगा।

नवीं कक्षा में ही संतोष ने राजस्थान की हॉकी का प्रतिनिधित्व किया और जालंधर में पहला स्कूली हॉकी नेशनल खेला। दूसरा नेशनल जब वह दसवीं में आई थी, तो 1976 में वाराणसी बनारस यूपी में आयोजित हुआ, उस वक्त राजस्थान ने उनके सानिध्य में ऑल इंडिया हॉकी टूर्नामेंट में प्रथम स्थान प्राप्तकर स्वर्ण पदक प्राप्त किया।

उस वक्त कांकरोली एक कस्बे के रूप में ही था। लड़कियों पर कई तरह की पाबंदियां होती थी, लेकिन उन पर उनके परिवार द्वारा किसी भी प्रकार की कोई पाबंदी नहीं रखी। इसमें सबसे बड़ी भूमिका रही थी। उनके माता और पिता की उन्होंने अपनी बेटी को खेल के लिए कभी भी नहीं रोका, क्योंकि वह जानते थे कि संतोष हमारा नाम सदैव ऊंचा ही रखेगी। जब बेटी नेशनल हॉकी टीम में खेलने जाती थी, तो मां और पिता की आंखों में खुशी के आंसू निकल पड़ते थे। उनका गर्व से मस्तक ऊंचा हो जाता था।

जब उनकी बिटिया पढ़ने जाती थी, तो उसके पांव में पहनने के लिए जूते भी नहीं होते थे। भरी सर्दी में कोई गरम कपड़ा नहीं होने के कारण मां रेजे से बना हुआ, एक कपड़ा पहना देती थी और आगे उसके सेफ्टी पिन लगा देती थी, लेकिन इन सभी बातों का संतोष के जीवन में कोई भी प्रभाव नहीं पड़ा, वह हंसती मुस्कुराती हुई अपने पथ पर चलती रही।

उसका तो बस एक ही लक्ष्य था कि अपनी हॉकी स्टिक से मैदान को फतेह करने का, जब वह कोई मैच खेलने के लिए तैयार होकर मैदान में उतरती थी, तो प्रतिद्वंदी टीम के हौंसले ऐसे ही पस्त हो जाते थे, दर्शक दीर्घा में लोग उसका खेल देखने के लिए जमे रहते और जैसे ही वह अपनी स्टिक से बाल को गोलपोस्ट में डालती, तो पूरा मैदान उसके नाम के जयकारों से गूंज उठता था, तब मुस्कुराती हुई संतोष वापस अपनी पॉजीशन को संभाल लेती थी। फिर एक गोल करने के लिए पढ़ाई और खेल का सिलसिला निरंतर चलता रहा और

इसी बीच उन्होंने स्कूली और ओपन में 6 बार नेशनल हॉकी टूर्नामेंट खेला, जो उस वक्त जिले का एक कीर्तिमान था।

जब संतोष ने 11वीं की पढ़ाई पास की उसके बाद उनके पिता ने उसे जोधपुर के शारीरिक महाविद्यालय में शारीरिक शिक्षक की ट्रेनिंग के लिए भेज दिया, क्योंकि उनके पिता भी उनके जमाने के हॉकी खिलाड़ी रहे थे और उनका सपना था कि उनकी बेटी भी हॉकी की गुरु बने और वह अपने हुनर से कई और हॉकी के खिलाड़ियों को तैयार कर राजस्थान और भारत का नाम रोशन करें, पिता के इस सपने को संतोष ने बखूबी पूरा किया और उसने शारीरिक शिक्षक की ट्रेनिंग को पास कर लिया।

तभी उसकी जिंदगी में एक नया मोड़ आता है। 20 फरवरी 1977 को संतोष की शादी गंगरार निवासी श्री घनश्याम पूर्बिया के साथ कर दी जाती है। संतोष अपने पति के साथ गंगरार गांव में ही रहने लगी, तब किसी शादी में उनके दूर के भाई का गंगरार में जाना होता है। तब वह वहां संतोष को बड़े से घुंघट में देखता है, गांव के माहौल और लोक लाज से संतोष अपने भाई से बोल नहीं पाती। इसका मलाल भाई को बहुत होता है, क्योंकि वह संतोष की बेबाक छवि को जानता था, वह उसके सपनो से वाकिफ था, जब उसने संतोष के हौसलो को घुंघट की आड़ में दबे हुए पाया, तो वह बेचैन हो गया और कांकरोली आकर पूरा वृतांत संतोष के पिता को बता देता है। संतोष के पिता को भी इन सभी बातों का दु:ख होता है, वह अपनी बेटी के भविष्य को लेकर चिंतित होने लगते हैं, तब वह गंगरार जाकर संतोष के पति और उसके सास- ससुर से बात करने का मन बनाते हैं और वह बेटी के ससुराल निकल पड़ते हैं।

वहां जाकर उन्होंने संतोष के भविष्य और उसके सपनों की पूरी कहानी बयां कर देते हैं। यह सब सुनकर संतोष के सास और ससुर ने बहुत बड़प्पन दिखाया और कहा कि यह हमारे घर की भी बेटी ही है। आप जो सोच रहे हैं वही सच है, कांकरोली में रहकर ही इसका भविष्य उज्जवल हो पाएगा। आप इससे ले जाइए, हमें हमारी बहू पर गर्व है, तब संतोष के पिता संतोष के साथ उसके पति को भी कांकरोली ले आते हैं। संतोष के पति की भी जेके टायर फैक्ट्री में नौकरी लग जाती हैं और कुछ ही दिनों बाद संतोष की जिंदगी में एक खुबसूरत मोड़ आता है, उसकी शारीरिक शिक्षक के पद पर बालिका विद्यालय काकरोली में नियुक्ति हो जाती है।

3 साल पहले जिस स्कूल में वह पढ़ती थी, वही शारीरिक शिक्षक के पद पर नौकरी पाकर वह बहुत खुश हो जाती है। क्योंकि उसके सपने अब आकार लेने लगते हैं, उसने शारीरिक शिक्षक पद की जिम्मेदारी को बहुत ही सहज रूप से अपना लिया। यह पल राजसमंद को भी गौरान्वित करने वाले थे, क्योंकि महिला शारीरिक शिक्षक के पद पर संतोष पूर्बिया राजसमंद की पहली महिला थी।

शारीरिक शिक्षक के पद पर रहते हुए उसने उसी वर्ष अपने पसंदीदा खेल हॉकी के अलावा बॉलीबाल, बॉस्केटबॉल, खो- खो, कबड्डी, बैडमिंटन, एथलेटिक्स की टीमें तैयार कर दी और बच्चों को प्रशिक्षण देने लग गई। वह बच्चों को प्रशिक्षण देने के लिए भरी सर्दी में सुबह 5.30 बजे मैदान पर आ जाती थी, तब पूरे मैदान में सिर्फ अंधेरा ही अंधेरा रहता था। क्योंकि उसे पता था सशक्त सेना को तैयार करने के लिए सेनापति को सबसे आगे रहना जरूरी होता है और उन्होंने अपने जीवन काल में एक कुशल सेनापति की भूमिका ही निभाई। खिलाड़ियों को हॉकी के कई ऐसे गुर सिखाए जो वास्तव में बहुत ही अद्भुत थे, उनके लिए मैदान में उस वक्त कोई रिश्तेदार नहीं होता था, वह अपने बच्चों को भी एक खिलाड़ी के रूप में ही देखती थी। गलती करने पर उन्हें डांटना फिर भी गलती नहीं सुधारने पर उन्हें सजा भी देने से वह नहीं चुकती थी।

ऐसा ही एक वाक्या उन्होंने हमसे साझा किया, उनकी छोटी बहन सुमित्रा उन्हीं के स्कूल में पढ़ती थी। वह भी हॉकी की खिलाड़ी थी, मैदान पर वह कुछ गलती कर रही थी, बार- बार संतोष के कहने पर भी वह उस गलती को सुधार नहीं पा रही थी, तब उन्होंने अपनी छोटी बहन को अंतिम चेतावनी दी कि इस बार गलती नहीं होनी चाहिए, लेकिन सुमित्रा ने फिर वही गलती दोहराई। उसी वक्त गुरु के रूप में संतोष ने आव देखा न ताव उसी की स्टिक से उसके पांव पर जोरदार मार लगाई।

क्योंकि उसे चिंता थी कि उसके हर एक खिलाड़ी की, उनके भविष्य की, आज उनकी छोटी बहन भी चित्तौड़गढ़ में शारीरिक शिक्षक के पद पर है, आज भी संतोष उससे पूछती है।

क्या वह चोट का निशान आज भी है, तो सुमित्रा यही कहती है कि तुम्हारी उसी चोट के निशान की वजह से आज मेरी जिंदगी खुशहाल है और मुझे गर्व है मेरे गुरु पर जिसने उस वक्त किसी भावनाओं में ना बहकर मेरे भविष्य के लिए मुझे जो इनाम दिया है, वह मेरे जीवन का सबसे बेहतर इनाम था। उनकी ऐसी सेवा, समर्पण और निस्वार्थ भावना के लोग कायल होने लगे और वह अपनी बेटियों को भी संतोष मैडम को अच्छी हॉकी सिखाने के लिए सौंप देते थे। क्योंकि एक अच्छा गुरु हर किसी को नसीब नहीं होता। संतोष को उन खिलाड़ियों में अपना भविष्य नजर आता था, वह जानती थी कि आज अगर इन पर कुछ सख्ती की जाएगी, तो कल यह निखर कर जमाने के सामने बहुत ही खूबसूरत नजर आएंगें। बाहर से सख्त और अंदर से बहुत ही कोमल हृदय को लेकर वह मैदान के इस छोर से उस छोर तक उन खिलाड़ियों को समझाते समझाते दौड़ती रहती थी। मैदान में प्रेक्टिस के बाद वह चल पड़ती थी स्कूल की ओर, वहां पर भी वह पूरा समय देती। स्कूल के कई सारे काम वह अकेले ही निपटा देती थी, उसने अपने पूरे जीवन में अपने कर्तव्य का पूरी ईमानदारी से पालन किया। स्कूल की छुट्टी के बाद कुछ घंटों आराम करने के बाद फिर शाम 4 बजे वह आ जाती थी, उसी मैदान फिर वही प्रैक्टिस उन खिलाड़ियों को सिखाना किस परिस्थिति में कैसे मैच को अपने हक में बनाना, प्रतिद्वंदी टीम पर कैसे हावी रहना और साथ ही साथ आत्मरक्षा के उपाय बताना, यह सब बातें वह बहुत ही बारीकी से उन खिलाड़ियों को सिखाती रहती।

गुरु दक्षिणा :

जब एक बार संतोष अपनी टीम भीलवाड़ा जिले के शाहपुरा में आयोजित होने वाले हॉकी टूर्नामेंट में लेकर जाती है, वहां पर उनकी टीम बहुत ही अच्छा प्रदर्शन कर फाइनल में पहुंच जाती है, वहां पर फाइनल में उनका मुकाबला उनके ही गुरु मुरलीधरजी लड्ढा की टीम से होता है और वहां पर उनके ही गुरु की टीम पर विजय प्राप्त कर फाइनल जीत लिया जाता है। इस पर उनके गुरु मुरलीधरजी बहुत खुश होते हैं और संतोष को कहते हैं कि आज तूने अपने गुरु को गुरु दक्षिणा दे दी। आज मेरा सीना गर्व से चौड़ा हो गया है, आज मैं बहुत खुश हूं, तब गुरुजी ने बहुत खुश होकर पूरी टीम को भरपेट मिठाई खिलाई।

संतोष पूर्बिया के सानिध्य में उनकी टीम बहुत ही सशक्त बनकर उभरी और उनके नेतृत्व में 17 बार उनकी टीम अजेय रही। जब उनके द्वारा सिखाई हुई कुछ बालिकाएं 10जी के बाद 11जी में श्री बालकृष्ण विद्यालय में प्रवेश लेती है, क्योंकि उनके विद्यालय 10जी तक ही था, तब स्कूल टूर्नामेंट में बालकृष्ण विद्यालय की 6 बालिकाएं जो उनकी ही स्टूडेंट थी और 7 बालिकाएं उनके विद्यालय की थी, उनका राज्य की टीम में चयन होता है। उस टीम को प्रशिक्षक के तौर पर श्रीमान हीरालालजी व्यास और संतोष पूर्बिया जयपुर ले जाते हैं, तब राजसमंद की टीम राजस्थान में स्वर्ण पदक जीतने में कामयाब हो जाती है, पूरे नगर में इस बात की खबर आग की तरह फैल जाती है। कांकरोली का हर एक व्यक्ति इस खुशी में अपनी खुशी मनाता हुआ नजर आता है, बालकृष्ण विद्यालय और बालिका विद्यालय को रंगीन रोशनी से सजाया जाता है। पूरी टीम का कांकरोली आने पर भव्य रूप से स्वागत किया जाता है, उनकी पूरे नगर में खुले रथ पर सवारी निकाली जाती है। उनके सम्मान में एक बहुत बड़ा आयोजन श्री बालकृष्ण विद्यालय के ग्राउंड में किया जाता है। इन खूबसूरत पलो को देखने का सौभाग्य मुझे भी हुआ। मैं भी अपने आपको यह सब कुछ देखते हुए गौरवान्वित महसूस कर रहा था, आज वह तेरह ही लड़कियां शारीरिक शिक्षक के पद पर अपनी सेवाएं दे रही है और कई ऐसी प्रतिभाओं को अपने गुरु की बताई बातों और उनके अनुभव को उनसे साझा करती हुई दिखाई देती है।

उनकी तैयार की हुई कई खिलाड़ी तो ऐसी भी है, जिन्होंने अपने हुनर से पूरे भारत भर में नाम कमाया। मिनी हॉकी ओलंपिक पुणे में इनकी शिष्या जय श्री ठाकुर पिता गोपाल ठाकुर ने परचम लहराया। एक और इन्हीं की शिष्या मीना चौधरी पिता बिहारीलाल चौधरी ने नेशनल ऑल इंडिया हॉकी टूर्नामेंट में चौथा स्थान प्राप्त किया।

आज जब भी राजसमंद में हॉकी की कहीं बात होती है, तो संतोष पूर्बिया का नाम सबसे पहले आता है। इन्होंने अपने 40 साल के कॅरियर में कम से कम 60 लड़कियों की जिंदगी को बहुत ही खूबसूरत बना दिया। आज वह सब सरकारी स्कूलों में अपने उच्च पदों पर आसीन है और उन्होंने भी इस देश को कई खिलाड़ी तैयार करके सौंप दिए हैं। जिंदगी के कई उतार- चढ़ावो के बीच आज भी संतोष एक पहाड़ की भांति अजेय खड़ी हुई नजर आती है। दु:खों को वह महादेव के विष की तरह पीती हुई दिखाई देती है। 31 दिसंबर 2018 को राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय राजनगर से संतोष पूर्बिया सेवानिवृत्ति होती है, वह अपने 40 साल और 1 माह के शारीरिक शिक्षक पद की नौकरी से बेहद खुश है। क्योंकि उन्होंने अपने पद को कभी कलंकित नहीं होने दिया और पूरी निष्ठा से उस कार्य को आनंद के साथ संपादित किया। ऐसी कर्तव्यनिष्ठ, निष्ठावान, बेबाक, समर्पित संतोष पूर्बिया को हम दिल से प्रणाम करते हैं।

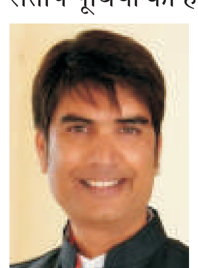

राहुल दीक्षित RD
साहित्यकार कांकरोली

'राज प्रशस्ति' महाकाव्य
तैलंग पं. रणछोड़ भट्ट का अनुपम शिला शब्द शिल्प

जलदर्पण में निहारता संगमरमरी शब्द सौन्दर्य

त्रयोदश सर्ग

संस्कार शिक्षण से सांस्कृतिक जीवन मूल्यों के सुदृढ़ीकरण की दृष्टि से मेवाड़ का इतिहास सदैव एक श्रेष्ठ पाठशाला की भूमिका निर्वहन करता आया है। इस अनुकरणीय परम्परा के उदाहरण प्रस्तुत किये थे राणा राजसिंह ने। त्रयोदश सर्ग उसी के भव्य चित्र को सामने लाता है।

मेवाड़ प्रदेश की संस्कृति व समाज संरक्षण के साथ अतिथि सत्कार परंपरा का चित्ताकर्षक वर्णन पं. रणछोड़ ने किया है। राजसमुद्र के प्रतिष्ठा महोत्सव के लिए की जा रही तैयारियों, आहूत अतिथियों के स्वागत और प्रजा के योग क्षेम का वर्णन पठन योग्य है। आयोजन हेतु राजा महाराजाओं और सम्माननीय जन को उपहारों के साथ न्यौता भेजने की राज परंपरा का दांतों तले अंगुली दबाने का वर्णन कवि की काव्य कला का अतुलनीय उदाहरण है। महाकवि का मत है कि लगा जैसे राणा राजसिंह ने राजा रघु के समान इस आयोजन को सफल बनाने मानों कुबेर द्वारा अकूत धन संग्रह कर लिया हो।

जनप्रिय राजा की प्रजा द्वारा, आयोजन में होने वाले अनुष्ठान और भोजन आदि में स्वेच्छापूर्वक सहयोग करने के उद्देश्य से सहयोग की गई भोजन व यज्ञ सामग्री का उल्लेख किया गया है। इस प्रसंग में कवि ने राजनगर को ''रस के समुद्र'' की उपमा दी है। ''राजंस्तवायं नगर:समुद्र:''। यह अवसर रहा जब राणा ने देबारी में जया बावड़ी का निर्माण कराया और विभिन्न दानों के लिए नौचौकी पर तीन मंडप सहित नौ के वास्तुशास्त्रीय दर्शन को संगमरमर की रचनाओं द्वारा प्रकट किया गया। अंक और वास्तु के गहन ज्ञान को इस सर्ग में अध्ययन किया जा सकता है।

समग्रत: अंक आधारित वास्तु के साथ 'नौ चौकी' के पीछे राणा राजसिंह की यश वृद्धि की कामना का भाव है।

''यशोस्तु वै षोडशसत्कलेंदुप्रभं प्रभोर्वेति कृत: प्रकार:''
(13/33)

प्रस्तोता :

डॉ. राकेश तैलंग
वरिष्ठ साहित्यकार
द्वारकेश मार्ग, कांकरोली
मो. 9460252308

रिश्तों की गांठ

कोरोना का कहर, जीना सिखा दिया
घर- घर नजारा, सजग करा दिया।
लॉकडाउन जिन्दगी, बाहर ना जाएं
वक्त की मार, अपना बना दिया।
भीड़भाड़ महामारी, मास्क दूरी रखें
फुरसत मिली ऐसी, सत्संग बना दिया।
किया विनाश जग, परिणाम मिलें
प्रकृति इशारा ही, सावधान करा दिया।
हाथ धुलाई साबुन, स्वच्छता हरपल
योग जरूरी सुबह, ध्यान लगा दिया।
मजहब चाहे कोई, मैत्री भाव बढ़े
रिश्तों की गांठ महिमा, मजबूत बना दिया।

सत्यनारायण नागौरी
व्याख्याता राउमावि केलवाड़ा
मो. 9610334431

अनमोल रिश्ता है दोस्ती

कहते हैं रिश्ते आसमान में बनते हैं, किंतु कुछ रिश्ते ऐसे होते हैं, जो धरातल पर तय होते हैं। इन रिश्तों का आधार रक्त नहीं वरन भावनाएं होती हैं। दिल और भावनाओं से जुड़ा ऐसा ही एक खूबसूरत रिश्ता है दोस्ती का। दोस्ती दो दिलों का संगम है, जो विश्वास और प्रेम की नींव पर आधारित है। दोस्ती पर जीवन की सफलता और असफलता निर्भर है। क्योंकि संगति का प्रभाव हमारे आचरण और व्यक्तित्व पर पड़ता है। एक सच्चा और अच्छा मित्र जीवन के लिए अनमोल उपहार होता है। एक सच्चा मित्र सिर्फ मित्र ही नहीं होता है, बल्कि वह मां के समान कोमल, पिता के समान सशक्त, भाई के समान स्नेही और गुरु के समान ज्ञानवान मार्गदर्शक होता है। मित्र हमारे लिए संकट मोचन की तरह होता है। संकट और विपत्ति के समय वही हमें धैर्य बंधाता है। संकट को दूर करने में हमारी मदद करता है। भगवान श्री कृष्ण अर्जुन के लिए संकट मोचन ही थे, जो महाभारत के युद्ध में सारथी बनकर अर्जुन का साथ देते रहे। मित्र संकट मोचन की तरह सुरक्षा कवच होता है।

मित्र सुख दुख का साथी होता है, हमारे सुख और दुख में साझेदार होता है। भगवान श्री कृष्ण कहा, द्वारका के राजा थे, किंतु अपने दीनहीन निर्धन मित्र सुदामा के प्रति उनके दिल में अगाध प्रेम था। उनके दुख और दरिद्रता को दूर करने के लिए उन्होंने प्रयास भी किए। उनके सुख और दुख में उनके सहभागी बने रहे।

एक सच्चा मित्र गुरु के समान पथ प्रदर्शक होता है। सही राह दिखाता है, गलत राह पर जाने से रोकता है। अच्छे और बुरे में फर्क करना सिखाता है। उपलब्धियों को छूने में मदद करता है। इतिहास गवाह है कि किस तरह चाणक्य ने एक सामान्य से व्यक्ति चंद्रगुप्त मौर्य को मगध का राजा बना दिया। दोनों के मध्य गहन मित्रता थी। इस मित्रता के बलबूते पर चंद्रगुप्त मौर्य ने विशाल साम्राज्य स्थापित किया। ऐसे अनेकों उदाहरण मौजूद हैं, जो यह बताते हैं कि सच्चा मित्र पथ प्रदर्शक होता है। प्यार और अपनत्व का एहसास होता है। दोस्त, दोस्ती एक मधुर रिश्ता है, जिसमें प्यार और अपनापन होता है, जो निस्वार्थ होता है। इसी प्यार और अपनेपन के कारण ही एक मित्र दूसरे मित्र के सुख के खातिर अपनी जान तक न्यौछावर करने के लिए तैयार रहता है। दोस्ती का संबंध आंख और हाथ जैसा है, जिस प्रकार हाथ को चोट लगने पर सबसे पहले आंख रोती है, उसी प्रकार आंख को कुछ होने पर सबसे पहले हाथ उसके पास जाता है।

दोस्ती एक खूबसूरत प्यारा सा एहसास है प्यार भरा रिश्ता है, जो जीवन को सरल और सरस बना देता है। वह व्यक्ति भाग्यशाली है, जिसके पास सच्चा मित्र होता है और उससे अधिक दीन हीन कोई नहीं, जिसका कोई मित्र नहीं होता है, किंतु एक बात गौरतलब है कि मित्र का चयन अत्यंत सावधानी से करना चाहिए। क्योंकि संगति का असर हमारे व्यक्तित्व और हमारे जीवन पर बहुत अधिक पड़ता है। इसके अलावा सच्चे मित्र को ईश्वर का अनमोल उपहार समझ कर हमेशा अपने नजदीक रखना चाहिए। क्योंकि सच्चा मित्र खुशियों का अनुपम खजाना है।

श्रीमती कीर्ति दुबे
10 विजयनगर लाल चौकी खंडवा
मध्यप्रदेश, मो. 9685862269

लघुकथा

भेदभाव

जगदीशप्रसाद जी ने अपने एकमात्र पुत्र को अध्यापक की नौकरी होते हुए भी इतना पढ़ा लिखा दिया कि आज वह एक कम्पनी में मैनेजर है। जगदीशप्रसाद जी के बारह साल व नौ साल के दो पोते हैं।

कोरोना के कारण लॉकडाउन लग गया, तो जगदीश प्रसाद जी दोनों पौत्र को घर पर ही घंटा, दो घंटा पढ़ाते, जिससे उनका समय भी बीत जाता।

एक दिन जगदीशप्रसाद जी का बेटा बोला– पापा! आज से बाजार से सब्जी व खाने पीने का सामान आप लेकर आना। मेरे बाल बच्चे है। आपकी तो वैसे भी उम्र हो गई है।

यह बात जब जगदीशप्रसाद जी के बड़े पोते ने सुनी तो बोला– पापा! आज से बाजार का काम मैं करूंगा। मुझे कुछ हो गया, तो आपके एक बेटा और है, लेकिन दादा तो एक ही है। यह सुनकर जगदीश प्रसाद जी व उनके बेटे की आंखों से आंसू निकल पड़े।

राजेंद्र खोखावत
186 अशोक नगर, उदयपुर
मो. 9414001031

कविता

मजदूर

संवेदना पिघल रही हैं इस संसार में,
मजदूर धंस रहा हैं दर्द की दीवार में।

आंख से गिरती जल की हर धार,
सम्मुख सुखों का उनके यह संहार,
हृदय में उठ पड़ता हैं शूल अपार,
दु:ख ही बंधा हैं उनके जीवन सार में,
मजदूर धंस रहा हैं दर्द की दीवार में।

मार्ग पर छाया है वीरानापन, बेबसी का शर,
गाड़ियों की जड़ता, खामोशियों की बहार,
थी पंचर की दुकान, मिलता था दो जून का आहार,
हाथ अब वो भी नहीं, ना दे कोई, ना विश्वास उधार में,
मजदूर धंस रहा है दर्द की दीवार में।

कोलाहल जीवन का थमा थमा ठहरा,
महामारी का ये कैसा विकराल प्रहार,
हो गए कुछ अनाथ विधवा, कुछ ना कर पाई सरकार
प्रकृति का रौद्र रूप दिखता, आहत नैनों के अश्रु अपार में
मजदूर धंस रहा है दर्द की दीवार में।

हैं घर को लौटने की विवशताएलंबी दूरी का जहर,
साथ भूखे प्यासे मासुम, कितनी कठिन डगर,
पांव में पड़े छाले तपती धूप में, चले अनवरत आठों प्रहर
जन्में नवजात शिशु तो कुछ हुए, मौत को प्यारे इस सफर में
मजदूर धंस रहा है दर्द की दीवार में।

भाविका बंधु देवाशीष
रेती मोहल्ला, मंदिर मार्ग
कांकरोली,
जिला राजसमंद

इस महापुरुष को जानते हैं?

उन्हें किसी भी दिन शहर के अन्नपूर्णा होटल में पच्चीस रुपए की थाली का खाना खाते हुए देखा जा सकता है। इसके साथ ही वह आज भी बीएचयू में अपनी चिकित्सा सेवा नि:शुल्क जारी रखे हुए हैं। डॉ. लाहिड़ी को आज भी एक हाथ में बैग, दूसरे में काली छतरी लिए हुए पैदल घर या बीएचयू हॉस्पिटल की ओर जाते हुए देखा जा सकता है। लोगों का नि:शुल्क इलाज करने वाले बीएचयू के जाने माने कार्डियोथोरेसिक सर्जन पद्मश्री डॉ. टी.के. लाहिड़ी (डॉ. तपन कुमार लाहिड़ी) ने उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से उनके घर पर जाकर मिलने से इनकार कर दिया है। योगी को वाराणसी की जिन प्रमुख हस्तियों से मुलाकात करनी थी, उनमें एक नाम डॉ. टी.के. लाहिड़ी का भी था। मुलाकात कराने के लिए अपने घर पहुंचने वाले अफसरों से डॉ. लाहिड़ी ने कहा कि मुख्यमंत्री को मिलना है, तो वह मेरे ओपीडी में मिलें। इसके बाद उनसे मुलाकात का सीएम का कार्यक्रम स्थगित कर दिया गया। अब कहा जा रहा है कि मुख्यमंत्री चाहते तो डॉ. लाहिड़ी से उनके ओपीडी में मिल सकते थे, लेकिन वीवीआईपी की वजह से वहां मरीजों के लिए असुविधा पैदा हो सकती थी।

जानकार ऐसा भी बताते हैं कि यदि कहीं मुख्यमंत्री सचमुच मिलने के लिए ओपीडी में पहुंच गए होते, तो डॉ. लाहिड़ी उनसे भी मरीजों के क्रम में ही मिलते और मुख्यमंत्री को लाइन में लगकर इंतजार करना पड़ता। बताया जाता है कि इससे पहले डॉ. लाहिड़ी तत्कालीन प्रधानमंत्री चंद्रशेखर को भी इसी तरह न मिलने का दो टूक जवाब देकर निरुत्तरित कर चुके हैं।

सचमुच 'धरती के भगवान' जैसे डॉ. लाहिड़ी वह चिकित्सक हैं, जो वर्ष 1994 से ही अपनी पूरी तनख्वाह गरीबों को दान करते रहे हैं। अब रिटायरमेंट के बाद उन्हें जो पेंशन मिलती है, उसमें से उतने ही रुपए लेते हैं, जिससे वह दोनो वक्त की रोटी खा सकें। बाकी राशि बीएचयू कोष में इसलिए छोड़ देते हैं कि उससे वहां के गरीबों का भला होता रहे। वह इतने स्वाभिमानी और अपने पेशे के प्रति इतने समर्पित रहते हैं कि कभी उन्होंने बीएचयू के बीमार कुलपति को भी उनके घर जाकर देखने से मना कर दिया था।

ऐसे ही डॉक्टर को भगवान का दर्जा दिया जाता है। तमाम चिकित्सकों से मरीजों के लुटने के किस्से तो आए दिन सुनने को मिलते हैं, लेकिन डॉ. लाहिड़ी देश के ऐसे डॉक्टर हैं, जो मरीजों का नि:शुल्क इलाज करते हैं। अपनी इस सेवा के लिए डॉ. लाहिड़ी को भारत सरकार द्वारा वर्ष 2016 में चौथे सर्वश्रेष्ठ नागरिक पुरस्कार 'पद्म श्री' से सम्मानित किया जा चुका है। डॉ. लाहिड़ी ने सन् 1974 में प्रोफेसर के रूप में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में अपना कॅरियर शुरू किया था और आज भी वह बनारस में किसी देवदूत से कम नहीं हैं। बनारस में उन्हें लोग साक्षात भगवान की तरह जानते- मानते हैं। जिस ख्वाब को संजोकर मदन मोहन मालवीय ने बीएचयू की स्थापना की, उसको डॉ. लाहिड़ी आज भी जिन्दा रखे हुए हैं।

वर्ष 2003 में बीएचयू से रिटायरमेंट के बाद से भी उनका नाता वहां से नहीं टूटा है। आज, जबकि ज्यादातर डॉक्टर चमक-दमक, ऐशोआराम की जिंदगी जी रहे हैं। लंबी- लंबी मंहगी कारों से चलते हैं, मामूली कमीशन के लिए दवा कंपनियों और पैथालॉजी सेंटरों से सांठ-गांठ करते रहते हैं, वही मेडिकल कॉलेज में तीन दशक तक पढ़ा- लिखाकर सैकड़ों डॉक्टर तैयार करने वाले डॉ. लहरी के पास खुद का चारपहिया वाहन भी नहीं है। उनमें जैसी योग्यता है, उनकी जितनी शोहरत और इज्जत है, चाहते तो वह भी आलीशान हॉस्पिटल खोलकर करोड़ों की कमाई कर सकते थे, लेकिन वह नौकरी से रिटायर होने के बाद भी स्वयं को मात्र चिकित्सक के रूप में गरीब- असहाय मरीजों का सामान्य सेवक बनाए रखना चाहते हैं। वह आज भी अपने आवास से अस्पताल तक पैदल ही आते जाते हैं।

उनकी बदौलत आज लाखों गरीब मरीजों का दिल धड़क रहा है, जो पैसे के अभाव में महंगा इलाज कराने में लाचार थे। गंभीर हृदय रोगों का शिकार होकर जब तमाम गरीब मौत के मुंह में समा रहे थे, तब डॉ. लाहिड़ी ने फरिश्ता बनकर उन्हें बचाया।

डॉ. लाहिड़ी जितने अपने पेशे के साथ प्रतिबद्ध हैं, उतने ही अपने समय के पाबंद भी। आज उनकी उम्र लगभग 75 साल हो चुकी है, लेकिन उन्हें देखकर बीएचयू के लोग अपनी घड़ी की सूइयां मिलाते हैं। वे हर रोज नियत समय पर बीएचयू आते हैं और जाते हैं। रिटायर्ड होने के बाद विश्वविद्यालय ने उन्हें इमेरिटस प्रोफेसर का दर्जा दिया था। वह वर्ष 2003 से 2011 तक वहां इमेरिटस प्रोफेसर रहे। इसके बाद भी उनकी कर्तव्य निष्ठा को देखते हुए उनकी सेवा इमेरिटस प्रोफेसर के तौर पर अब तक ली जा रही है। जिस दौर में लाशों को भी वेंटीलेटर पर रखकर बिल भुनाने से कई डॉक्टर नहीं चूकते, उस दौर में इस देवतुल्य चिकित्सक की कहानी किसी भी व्यक्ति को श्रद्धानत कर सकती है।

रिटायर्ड होने के बाद भी मरीजों के लिए दिलोजान से लगे रहने वाले डॉ. टी.के. लाहिड़ी को ओपन हार्ट सर्जरी में महारत हासिल है। वाराणसी के लोग उन्हें महापुरुष कहते हैं। अमेरिका से डॉक्टरी की पढ़ाई करने के बाद 1974 में वह बीएचयू में 250 रुपए महीने पर लेक्चरर नियुक्त हुए थे। गरीब मरीजों की सेवा के लिए उन्होंने शादी तक नहीं की। सन् 1997 से ही उन्होंने वेतन लेना बंद कर दिया था। उस समय उनकी कुल सैलरी एक लाख रुपए से ऊपर थी। रिटायर होने के बाद जो पीएफ मिला, वह भी उन्होंने बीएचयू के लिए छोड़ दिया। डॉ. लाहिड़ी बताते हैं कि रिटायरमेंट के बाद उन्हें अमेरिका के कई बड़े हॉस्पिटल्स से ऑफर मिले, लेकिन वह अपने देश के मरीजों की ही जीवनभर सेवा करने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ हैं। वह प्रतिदिन सुबह छह बजे बीएचयू पहुंच जाते हैं और तीन घंटे ड्यूटी करने के बाद वापस घर लौट आते हैं। इसी तरह हर शाम अपनी ड्यूटी बजाते हैं। इसके बदले वह बीएचयू से आवास के अलावा और कोई सुविधा नहीं लेते हैं।

संजयसिंह
उत्तरप्रदेश

कतार से कटा घर की समीक्षा

दुनिया की सबसे बड़ी आबादी आज महानगरों में रहती है। एक सुविधाओं से भरा पूरा जीवन। उसके अंदर बसे समाज और लोग जो अलग अलग जगहों से जाकर वहां बसे है, के बारे में हम ज़्यादा नहीं जानते। महानगर में बसे लोगों के अंतर्द्वंद्व, सपनों, जिजीविषा और उनके संघर्षो को अपनी कहानियों के जरिए लोगों के सामने लाया है। अमेरिका में रह रही प्रख्यात लेखिका/ अनिल प्रभा कुमार ने। उनकी कहानियां समाज के हर वर्ग, हर उम्र के लोगों की कहानियां है। उनके पात्र संघर्ष करते है, यथार्थ को बदलने की छटपटाहट उनमें साफ़ दिखती है।

'कतार से कटा घर' इस संग्रह की बेहतरीन कहानी में से एक है। समलिंगी संबंधो को एक बच्चे की नजर से बहुत ही साफ़गोई के साथ पाठकों के सामने रख दिया है। महानगर में ही कहीं एक अद्भुत कहानी है। आपको सोचने पर मजबूर कर देती है। कहानी महानगर की भीड़ में अकेले पड़ गए इंसानो की त्रासद दास्तान है। बेमौसम की बर्फ एक साधारण सी लगने वाली कहानी अंत तक एक अमूल्य कहानी बन जाती है। सफेद चादर मौत के आसपास जीवन को बुनने की कहानी है। कहानी का विषय पाठक को अंदर तक झकझोर देता है। दिवार के पार, वायवी, उसका मरना, मौन राग, ऐसे तो नहीं और जब मंदिर ढहते हैं, इस संग्रह की पठनीय कहानियां है।

व्यक्तिगत रूप से मैं मध्यवर्गीय अवसाद और कुंठाओ को रचनाशीलता की हानि मानता हूं। अनिलप्रभा ने तख्तियां लेकर संघर्ष करते मध्यमवर्गीय पात्रों को जिस मुस्तैदी से उकेरा है, वो काबिले गौर है। अनिल प्रभा जी के पास कहानी कहने की अपनी एक कला है, अपना एक शिल्प है, जो उन्हें कंटेम्परेरी कथाकारों से अलग करता है। मज़े की बात है कि इस संग्रह को दस से बारह लोगों ने पढ़ा और एक स्वर में कहानियों की तारीफ की।

लेखिका को इस संग्रह के लिए ढेरों शुभकामनाएं।

चंद्रपाल सिंह
मुंबई, मो. 98677 77284

तीखी मिर्ची

विजय शर्मा
94142-39648

हम स्वतंत्र है या आजाद ?

पं. लड्डूप्रसाद स्वाधीनता दिवस का उत्सव मनाकर हाथ में मोतीचूर का लड्डू दबाकर लौट रहा था। सरकारी आयोजन की औपचारिक गतिविधियों में लड्डू के इन्तजार में लड्डूप्रसाद को पूरा प्रोग्राम देखना पड़ा। नेताओं के भाषण की थोड़ी थोड़ी बात ही लड्डूप्रसाद की मोटी बुद्धि में उतर पाई थी। मेरे बचपन का मित्र लड्डूप्रसाद पढ़ाई में कमजोर था, तो पढाई छोड़कर मंदिर में पूजा अर्चना करते-करते पंडित बन गया, मगर यह है बड़ा देशभक्त। 15 अगस्त हो या 26 जनवरी, लड्डू के लोभ में ही सही, पर इसकी उपस्थिति सदैव रहती है।

समारोह से घर लौटते समय मुझे देखकर पंडितजी पूछने लगे। अरे भाई! बताओ यह आजादी दिवस और स्वतंत्रता दिवस में क्या अन्तर है? कोई नेताजी इसे आजादी का दिवस बताते हैं, तो कोई इसे स्वतंत्रता दिवस।

मैंने हंसते हुए कहा, यह सवाल हैं बडा रोचक, आओ मैं बताता हूं। यह कहते हुए मैंने लड्डूप्रसाद के कंधे पर हाथ रखा और हम चाय के ठेले के बाहर रखी बेंच पर बैठ गए। तभी चाय आ गई और मैंने चाय की एक चुस्की ली। फिर बोला- देखो लड्डूप्रसाद, इस दुकान पर देखो, दुकानदार ने यह चाय के कप डालने के लिए यह डिब्बा रखा है। इसका मतलब इसके लिए आज का दिन स्वतंत्रता दिवस है, मगर कुछ लोग फिर भी सड़क पर कचरा बिखेर रहे हैं, मतलब उन लोगों के लिए आजादी दिवस है।

मेरी यह बात लड्डू के मोटे दिमाग में बराबर घुस नहीं पाई और वह बोला ऐसे कैसे सबके लिए अलग अलग दिवस हो सकता है। तुम ढ़ंग से समझाओ। मैंने कहा चलो एक और उदाहरण बताता हूं। हम सरकारी ऑफिस में जाते हैं, वहां कुछ लोग समय पर आकर सबके काम नियमानुसार ईमानदारी के साथ निपटाते हैं। उनके लिए आज का दिन स्वतंत्रता दिवस है। वहीं कुछ लोग ऑफिस समय पर नहीं आते हैं, साथ ही लोगों के काम भी अटकाते है और रिश्वत लेकर ही फाइल आगे बढ़ाते हैं, ऐसे लोगों के लिए यह आजादी दिवस है। मेरी बात सुनकर पंडित हां में हां तो मिला रहा था, मगर फिर भी चेहरे पर प्रश्नवाचक मुद्रा बनाने लगा? मैंने कहा अब भी नहीं समझे? तो बोला तुम्हारी बाते मेरी समझ में आती तो मैंने भी पढ़ लिखकर कोई लेखक बन गया होता। मैनें कहा सुनो अब सरल शब्दों में सुनाता हूं। देश को अंग्रेजों से मुक्त कराने में हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने अपना जीवन तक समर्पित कर दिया। तब हम अंग्रेजी बंधन से मुक्त हो पाए। हमारे संविधान निर्माताओं ने बड़े विवेक और बुद्धि से नियम कानून बनाए, मगर आज के लोग उस स्वतंत्रता की कीमत कहां समझ रहे हैं। स्वतंत्र का अर्थ है स्वयं का एक तंत्र, स्वयं का एक उचित मार्ग, अर्थात् देश में हर नागरिक को अधिकार मिले हुए हैं, लेकिन साथ में कर्तव्य भी मिले हुए हैं। जिनका पालन हम सभी को करना चाहिए। मगर हम सभी अपने अधिकारों के प्रति बड़े सजग होते हैं, किन्तु देश के प्रति हम कर्तव्य को भूल जाते हैं। हम इस दिन अंग्रेजी दासता से आजाद हुए थे। इसलिए आजादी का दिवस तो है, मगर हमारे संविधान के अनुरूप देश चलता है। इसीलिए इसे स्वतंत्रता दिवस कहते हैं। यदि हम देश के प्रति अपने कर्तव्य का भी पूर्णतया पालन करते हैं, तभी हमारा सही मूल्यों में स्वतंत्रता दिवस मनाना सार्थक है।

अब समझ गया भाई, यह कहकर लड्डूप्रसाद अपने चाय के गिलास को कूड़ेदान में डालने लगा।

पत्नी बड़ी अजीब होती है

ये पत्नियां भी सच मे बड़ी अजीब होती है,
अंदर से नर्म मगर ऊपर से कठोर होती है,
देती है कभी सूरज की गर्मी सा अहसास,
तो देती है कभी शीतल चांदनी सा आभास,
सच में ये पत्नियां भी बड़ी अजीब होती है।

कभी डराती है तो कभी हौले से पुचकारती है,
इस तरह इंसान को अपने चक्रव्यूह में फंसाती है,
हर सूरत में मनवा कर रहती है अपनी सारी बात,
बखूबी उभारना जानती है उस गरीब के जज़्बात,
सच मे ये पत्नियां भी बड़ी अजीब होती है।

ओढ़े रहती है अपने इर्द गिर्द रहस्यमयी आभामंडल,
जाने कितने रफूचक्कर हो गए घर से लेकर कमंडल,
कोई हिमालय पहुंच गया, तो कोई सियासत में गया,
कोई यूं मौन हो गया और कोई बेबाक बोल रहा,
सच मे ये पत्नियां भी बड़ी अजीब होती है।

प्रत्येक बढ़ते कदम पर जिंदगी में साथ देती है,
मजबूती से हाथ थाम हर सांस में विश्वास देती है,
हर पति और परिवार का खुशनुमा नसीब होती है,
कुछ भी कहो मगर दिल के बहुत करीब होती है,
सच में ये पत्नियां भी बड़ी अजीब होती है।।

ललित सनाढ्य
नाथद्वारा

मिले थे जब तुम...

मिले थे जब तुम पहली बार
बरसी थी रिमझिम फुहार
लो बरसी फिर आज फुंहार
याद आया मुझे तेरा प्यार
मिले थे जब तुम पहली बार...

मोती चमके थे गालों पर
हीरे से टपकते बालों पर
बहक चले थे खयालों पर
पाया था जैसे ये संसार
मिले थे जब तुम पहली बार...

तुम कांपे जब बादल गरजे
गले लगे बिजली चमके
प्यास बुझी और मन हर्षे
सपना था मेरा वो साकार
मिले थे जब तुम पहली बार...

अफ़ज़ल खां अफ़ज़ल
वरिष्ठ साहित्यकार
जलचक्की, कांकरोली

कोरोना

कोरोना अब तो भागो ना
सभी परीक्षाएं रूकवा दी
अब तो तरस खाओ ना
कोरोना अब तो भागो ना।

शिड्यूल सबका बिगाड़ दिया
बेरहमी से कईयो को मार दिया
हम तो है बेगुनाह यूं सताओ ना
कोरोना अब तो भागो ना।

तुम्हारा कारनामा अब तो जान लो
वक्त के साथ खुद को पहचान लो
क्यो लेते हो, किसी की बद्दुआ
बहुत हो गया बस, जिद करो ना
कोरोना अब तो भाग, जाओ ना।

करवा दिए बाजार बंद
और सभी अपने घरों में नजरबंद
क्या खाएंगे, क्या खिलाएंगे
जीवन का लुट गया आनंद
खैलने के लिए बच्चे तरस गए
सभी कार्य वहीं अटक गए

पर तुझको हम भगा के रहेंगे
दुनियां से तुझे मिटा के रखेंगे
मेडिकल व पुलिस का तलबगार है
ये कर रहे हैं जनता की सेवा
तहेदिल से इनका शुक्रगुजार हूं

साबिर शुक्रिया
कवि, नाथद्वारा

बनो सच की ताकत
जयवर्द्धन पत्रिका
आपकी खबर
अब आपकी जुबानी..
अब आप
भी भेज सकते हैं
खबर

ताजा खबरों से
अपडेट रहने के लिए
SUBSCRIBE करें
YouTube
Jaivardhan
News

सादर अनुरोध
पाठकगणों से अनुरोध है कि ज्यादातर पाठकों के जयवर्द्धन पत्रिका की वार्षिक सदस्यता पूरी हो चुकी है। इसीलिए वार्षिक सदस्यता के लिए जल्द 200 रुपए या तीन वर्ष की सदस्यता के लिए 500 रुपए जमा करवा कर शक्ति स्पोर्ट्स शास्त्री मार्केट कांकरोली अथवा हमारे प्रतिनिधि से रसीद प्राप्त कर सदस्यता नवीनीकरण करवाएं।
संपर्क : 94142-39648

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
करें कॉल : 94142-39648

आजादी महायज्ञ में आहुति देने वाले गुमनाम स्वतंत्रता सेनानी नारायण

सन् 1857 की क्रांति से ही भारतीयों में आजादी हिलोरे मारने लगी थी, गांव-गांव, ढाणी-ढाणी में क्या नौजवान, क्या प्रौढ़ और क्या महिलाएं, सभी देश की आजादी के लिए लामबद्ध होने लगे थे। सन् 1942 के आते आते महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारत छोड़ो आन्दोलन ने जोर पकड़ा और आजादी के दीवाने खुलकर आजादी के इस महायज्ञ में अपनी आहूती देने घरों से निकल पड़े। मेरे गांव के **श्री नारायण नारायण** भी उन्हीं में से एक थे। वैसे तो मेरे गांव में और भी कई नौजवान थे, जैसे शंकरदेव भारती, विचित्र कवि काका, रामबाबु सनाढ्य, श्यामजी वर्मा, आनन्दलालजी गोरवा आदि स्वतत्रंता सेनानी आजादी की इस लड़ाई में अपनी सक्रिय भूमिका निभा रहे थे, पर नारायण नारायण का आजादी के प्रति समर्पण निराला ही था।

कांकरोली में करीब 112-113 वर्ष पूर्व धोरा मोहल्ला में सनाढ्य परिवार के स्व. श्री कज्जू पाण्डे उस वक्त के तात्कालिक महाराज गोस्वामी श्री बालकृष्णजी महाराज से अपनी वीरता और अपनी शारीरिक क्षमता को देखते हुए उन्हें महाराज श्री ने सिंह की उपाधि से अलंकृत किया था। अत: स्व. श्री कज्जूसिंहजी के घर पर स्व. श्रीमती पन्नी बाई की कोख से श्री नारायण नारायण का जन्म हुआ। बाल्यकाल से ही आप विलक्षण प्रतिभाओं के कारण एक होनहार बालक की तरह सामाजिक सेवा से जुड़े रहे। आपके पिता श्री कज्जूसिंहजी द्वारकाधीश मन्दिर में खर्च भंडार में कार्यरत थे। अत: श्री नारायण नारायण का भी मन्दिर में आना जाना बाल्यकाल से ही लगा रहा। मन्दिर के प्रसाद, दूध आदि पकवानों से उनका शारीरिक विकास होने लगा। वे अखाड़े में भी कसरत और कुश्ती में जोर आजमाइश करने लगे और युवा अवस्था तक वे हष्टपुष्ट फुर्तिले नौजवान बन गए। वे अपने पिता की पहली संतान थे, उनके चार और छोटे भाई श्री रघुनाथजी, नन्दकिशोरजी, हरिवल्लभजी व राधावल्लभ सनाढ्य थे। उनकी दो बहनें गंगा बाई व लछमा थी।

श्री नारायण नारायण युवावस्था से ही राष्ट्रीय विचारों से ओतप्रोत थे, आजादी की लड़ाई की खबरें जानने और नेताओं के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए वे अक्सर इधर उधर आस-पास के गांवों व शहरों में घर पर बिना बताए ही निकल जाया करते थे। अत: पिता श्री कज्जूसिंहजी ने सोचा कहीं लड़का घर छोड़कर भाग न जाए, इसलिए जल्दी ही उनकी शादी गणेशी बाई से करा दी, जिससे उन्हें तीन कन्याएं कमला, विमला, शकुन्तला हुई।

उग्र स्वभाव के कारण उनके मन में अंग्रेजों के प्रति घृणा का भाव भर गया था। देश को

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

आजाद कराने की छटपटाहट उनके हृदय को कचोटने लगी, वे घर से बिना बताएं सरदार भगतसिंह से मिलने निकल पड़े और कई

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
सम्पर्क : 94142-39648

कठिनाइयों के बाद भगतसिंह से मिलकर आजादी के आन्दोलन में अपना सब कुछ न्यौछावर करने का इरादा भगतसिंह के सम्मुख रखा। भगतसिंह भी उस समय अंग्रेज हुकुमत के छुपे छुपे ठिकानों पर अपना स्थान बदल रहे थे। अत: श्री नारायण नारायण ने भगतसिंह से कांकरोली सुरक्षित स्थान होने का हवाला देकर उन्हें अपने साथ कांकरोली ले आए। धोरा मोहल्ला स्थित अपने मकान पर उन्होंने सरदार भगतसिंह की खूब आवभगत की। अपने मां के हाथ की बनी मक्की की रोटी, पालक और फली के साग के साथ साथ मन्दिर का प्रसाद खिलाया और उनके आराम का पूरा पूरा खयाल रखा। 2-3 दिन बाद रात को गुपचुप तरीके से आपने अपने आदर्श भगतसिंह को कांकरोली से सकुशल विदा किया। नाथद्वारा के वरिष्ठ स्वतंत्रता सेनानी स्व. श्री नरेन्द्रपाल सिंह चौधरी के साथ वे घर से निकल पड़े और उनके साथ वे सीधे साबरमती आश्रम अहमदाबाद गए। वहां उन्होंने गांधीजी के दर्शन और आशीर्वचन का लाभ तो उठाया ही पर आश्रमवासियों के लिए जल सेवा में जुट गए।

एक लम्बे समय तक वे आश्रम में रहकर जल सेवा करते रहे, वहीं उन्हें बीमारी ने घेर लिया और वे पुन: कांकरोली आ गए। कुछ दिन स्वास्थ्य लाभ लेने के बाद वे पुन: आजादी के आन्दोलन में कूद पड़े, कांकरोली के बड़े बाजार में शंकरदेव भारती के साथ आपने एक राष्ट्रीय स्कूल भी चलाया और बच्चों में राष्ट्रीय भावना और आजादी की लड़ाई की बातें बताई। वे रोज बच्चों से भारत माता की जय के साथ नगर परिक्रमा पर निकल पड़ते, आपने कई नवयुवकों के साथ उदयपुर, भीलवाड़ा, बनेड़ा, कुंभलगढ़, आमेट, देवगढ़ आदि अनेकानेक स्थानों का दौरा किया और वहां के स्थानीय नवयुवकों को अपने साथ जोड़ अपने अपने गांव में आजादी की अलख जगाने को प्रेरित किया।

एक बार वे मेवाड़ के यशस्वी स्वतन्त्रता सेनानी स्व. श्री माणकलाल वर्मा के साथ सादड़ी में आजादी की अलख जगाने गए, वहां उन्होंने क्रान्तिकारी विचारों का भाषण दिया, लोगों में जोश भरा, इस बात की जानकारी अंग्रेज हुकुमत के गुप्तचरों ने प्रशासन को दी, तो प्रशासन ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और जेल में डाल दिया। स्व. श्री नारायण नारायण को विजयसिंह पथिक के साथ कुंभलगढ़ जेल में रखा गया। वहां उन्हें अनेक यातनाएं दी गई, कई कई दिनों तक भुखे प्यासे रखा गया, पर आजादी के इस दीवाने ने हार नहीं मानी। जेल की यातनाओं ने उनको बीमार बना दिया और आजादी का सपना अपनी आंखों में सजाए आजादी से पहले ही सन् 1945 में वे मौत की गोद में चिरनिद्रा में सो गए। स्व. श्री नारायण नारायण जैसे जांबाज स्वतंत्रता सेनानी के असमय अनाम चले जाने पर ही कवि हृदय बोल उठा।

तुमने दिया देश को जीवन, देश तुम्हें क्या देगा।
आजादी की अलख जगाने, नाम तुम्हारा लेगा।।

मेरे गांव के ऐसे आदर्श स्वतंत्रता सेनानी को आजादी के किस पर्व से अच्छा दिन और क्या होगा कि हम उन्हें हृदय से श्रद्धांजि दें और उन्हें याद करें।

प्रस्तोता :

अफजल खां अफजल
वरिष्ठ साहित्यकार,
जलचक्की, कांकरोली, राजसमंद
मो. 98284-75288

राजस्थान पत्रिका,
दैनिक भास्कर के साथ सभी
अखबारों में विज्ञापन
प्रकाशित कराने का एकमात्र स्थान
शक्ति
एडवरटाइजिंग
सभी
प्रकार की
खेलकूद
सामग्री
मिलने का
राजसमंद
में एकमात्र स्थान
शक्ति स्पोर्ट्स
शास्त्री मार्केट, कांकरोली (राजसमंद)
94142-39648, 94144-73275

कदमों से भारत को नापने वाले जुझारू व्यक्तित्व के धनी श्री नरेन्द्र पालीवाल

दुष्यंत कुमार की गज़ल का मशहूर शेर है–
कैसे कह दे कि आसमान में सुराख हो नहीं सकता
एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारों... ।

आदमी जब जुनून और ज़िद पर आ जाए, तो दुनिया में ऐसा कोई काम नहीं जो वो कर नहीं सकता। मैं अपनी लिखी कविता की पंक्तियों से बात शुरू करता हूं ।

दिल में कुछ करने का इरादा रखते हैं
वही तो आसमान छूने का माद्दा रखते हैं
उनकी उड़ानों को क्या रोक सकी विपरीत हवाएं
जो अपनी शक्ति से भी हौंसला ज्यादा रखते हैं ।

मेवाड़ की भूमि में आज भी वही जज्बा वही जोश कायम है वही जुनून कायम है, जो सदियों पहले था। चट्टान से टकराने का हौंसला भी मेवाड़ के लोगों में कूट- कूट कर भरा है। दुनिया में चाहे कितना भी कठिन काम हो, अगर मेवाड़ी लोग उसे करने पर आए उसे पूरा करके ही छोड़ते हैं।

आज बात करते हैं, एक ऐसे ही जज्बाती युवक की जो अपने देश से अपनी भूमि से बेइंतहा मोहब्बत करता था। इश्क मोहब्बत और भाईचारे का पैगाम लेकर कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक हिंदुस्तान से लेकर नेपाल तक कई बार पैदल ही चल पड़ा, तो कई बार साइकिल के सहारे से निकल पड़ा यात्रा पर... ।

राजसमंद शहर में कांकरोली क्षेत्र के धोरा मोहल्ला निवासी श्री मोहनलाल पालीवाल व पार्वती देवी के एक संभ्रांत परिवार में 7 जुलाई 1959 में जन्मे श्री नरेंद्र पालीवाल मस्त मौला और फक्कड़ मिजाज से अपनी ही मस्ती में जीने वाले जो (बम भोले) के नाम से भी विख्यात थे। श्री नरेंद्र ने श्री द्वारकेश राष्ट्रीय व्यायामशाला अखाड़े पर 9 वर्ष की उम्र से ही व्यायाम करने जाना शुरू कर दिया।

जवानी में नियमित रोज 5 हजार दंड बैठक लगाने वाले पहलवानी के सब गुर सीखने वाले और साथ में ही तैराकी के शौकीन राजसमंद झील में अपनी मस्ती से तैरने वाले मलंग की तरह जीवन जीते थे। राजसमंद झील में अवैध मछली मारने वालो से लोहा लेने रात 3 बजे भी तालाब पर जाकर तालाब में बिछी जालो को निकाल फैंक देते थे।

15 अगस्त और 26 जनवरी के आयोजनों में अपने सीने के ऊपर से मोटरसाइकिल निकालने का करतब भी अक्सर वो नगरवासियों को दिखाया करते थे।

यात्रा वृतांत : 1984 से लेकर 2012 तक पदयात्रा और साइकिल पर यात्रा विभिन्न उद्देश्य से श्री नरेन्द्र ने की थी। सर्वप्रथम पहली यात्रा 2 अक्टूबर 1984 को कांकरोली से कन्याकुमारी तक की, जो 120 दिन में पूर्ण हुई। 25 वर्ष की आयु में पहली बार राष्ट्रीय एकता और अखंडता की कामना के साथ कांकरोली से कन्याकुमारी तक की यात्रा की थी। अपने इरादों पर अडिग रहने वाले नरेंद्र हाथ में मशाल ले अकेले ही पैदल निकल पड़े और करीब 4 माह में करीब ढाई हजार किलोमीटर की लंबी यात्रा कर कन्याकुमारी पहुंचे थे।

वह दृश्य मेरी आंखों के सामने आज भी घूमते हैं, बाल कृष्ण विद्या मंदिर स्कूल से सभी नगरवासियों की उपस्थिति में श्री नरेंद्र ने गाजे बाजे के साथ पहली यात्रा का शुभारंभ किया। नगर वासियों ने उन्हें फूल मालाओं से लाद दिया। मुझे आज भी जय चित्तौड़ फिल्म का वह गीत याद आता है, जो उनकी शान में बाजे वाले ने गाया बजाया था। ओ पवन वेग से उड़ने वाले घोड़े... सभी नगर वासी उनका स्वागत करते हुए उन्हें विदा करने बाल कृष्ण विद्या भवन स्कूल से जल चक्की चौराहे तक आए थे।

उस वक्त सूचना व संचार का अभाव होने की वजह से सिर्फ डाक द्वारा हर 20 दिन में गब्बूलाल जी अखबार वाले के नाम एक पोस्ट कार्ड लिखकर श्री नरेंद्र भेजा करते थे। यात्रा किस दिशा में

होकर कहां तक पहुंची उसकी सारी जानकारी नगरवासियों को देने के लिए उस जमाने में जनता मंच के बोर्ड लिखे जाते थे।

उस पर श्री मनोहर गिरी गोस्वामी यात्रा विवरण की सारी जानकारी लिखकर नगरवासियों तक पहुंचाते थे। यात्रा के दौरान तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री शिवचरण माथुर से भी श्री नरेंद्र की मुलाकात हुई। यात्रा पूर्ण करने के बाद जब वो कांकरोली लौटे, तब रात 8 बजे सब्जी मंडी के पास सुखपाल की छतरी पर नगरवासियों ने उनका हार्दिक अभिनंदन और स्वागत किया। फूल मालाओं से उन्हें लाद दिया।

अपनी यात्रा के दौरान सफर के कई रोचक किस्सों को उन्होंने शहरवासियों के बीच में साझा किया। इस दृश्य को मैंने अपनी आंखों से देखा है । दूसरी पदयात्रा उन्होंने कांकरोली से कश्मीर होते हुए नेपाल काठमांडू तक 4 माह में 1988 में की थी।

तीसरी साइकिल यात्रा कांकरोली से कारगिल वर्ष 2000 में कारगिल के शहीदों को श्रद्धांजलि देने के लिए मेवाड़ की पवित्र रज लेकर वे साइकिल से यात्रा करते हुए टाइगर हिल तक जा पहुंचे। उन्होंने सिंघनाले में रज को विसर्जित कर समूचे मेवाड़ की ओर से शहीदों को नमन किया और कारगिल से गंगासागर पश्चिम बंगाल तक की यात्रा की। कन्याकुमारी पहुंचकर हिंद महासागर, अरब सागर और बंगाल की खाड़ी के पवित्र संगम स्थल पर सूर्य देवता के सम्मुख शहीदों की रज एवं प्रात: स्मरणीय महाराणा प्रताप समरधरा रज को विवेकानंद आश्रम के सामने विसर्जित कर महा श्रद्धांजलि दी।

कन्या भ्रूण हत्या की रोकथाम के लिए और जन जागरण जनचेतना साइकिल यात्रा कांकरोली से जगन्नाथपुरी तक भी की। अपने जीवनकाल में छोटी बड़ी 10-11 पदयात्रा और साइकिल यात्राएं करके अपनी पहचान बनाने वाले श्री नरेंद्र ने श्री कृष्ण संकीर्तन चल झील भरण महासाइकिल यात्रा 7 दिसंबर 2010 कांकरोली के प्रभु श्री द्वारिकाधीश मंदिर के गोवर्धन चौक से सेतुबंध रामेश्वरम तक की यात्रा प्रारंभ की, जो करीब 7000 किमी. की यात्रा थी, जो 140 दिनों में पुरी की थी।

श्री द्वारकाधीश के राज भोग की झांकी के दर्शन के उपरांत मंदिर के गोवर्धन चौक से निवर्तमान जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री रामपाल शर्मा के मुख्य आतिथ्य में श्री द्वारकेश राष्ट्रीय व्यायामशाला के उस्ताद श्री अरुण कांत सांचीहर द्वारा इस महा साइकिल यात्रा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया।

उस वक्त श्री भगवती लाल पालीवाल, श्री विनोद सनाढ्य, श्री दिनेश श्रीमाली, श्री ललित चोरड़िया, श्री प्रदीप पालीवाल, श्री फतेहलाल अनोखा, श्रीमति आशा पालीवाल, श्री हरगोविंद पालीवाल, श्री अशोक रांका, श्री ओमप्रकाश व्यास, श्री रोड़ी लाल सनाढ्य, श्री सोहनप्रकाश भीम, श्री हरीवल्लभ गुर्जर, श्री चंद्र दा सनाढ्य, श्री नन्द लाल पालीवाल, श्री गिरिराज सनाढ्य, श्री मदनलाल सनाढ्य, श्री लोकेश गोस्वामी, श्री धर्मेंद्र गुर्जर, श्री जगदीश पालीवाल धर्मेटा, श्री गोपाल टेलर, श्री जितेंद्र पालीवाल, श्री कृष्णकांत पानेरी, श्री मनोहर गिरी गोस्वामी और उनके परिवार जन भी उपस्थित थे। डॉ. अनमोल पगारिया ने उन्हें प्राथमिक उपचार दवा का बॉक्स प्रदान किया।आचार्य श्री चंद्रप्रभजी और श्री ललित प्रभ जी से भी आशीर्वाद लेते हुए श्री नरेंद्र यात्रा पर रवाना हुए थे, जो जो उस वक्त राजसमंद में प्रवचन माला कथा करने आए थे।

यात्रा के दौरान की रोचक घटना

श्री नरेंद्र भोले स्वभाव के और दिलदार थे। किसी आश्रम पर साधु संतो के कहने पर हरिद्वार में विशाल भंडारा कर अपने यात्रा के दौरान ले गए 50 हजार रुपए एक दिन में खर्च कर दिए और घर पर फोन किया और इस घटना का हवाला देकर कांकरोली घर से मनीऑर्डर से आगे की यात्रा प्रारंभ करने के लिए और रुपए मंगवाए। श्री नरेन्द्र ने यात्रा पूर्ण करने बाद रास्ते में आने वाली समस्त पवित्र झीलों का पानी लाकर राजसमंद झील में संकल्प के साथ प्रवाहित किया।

अपने जीवन की आखिरी साइकिल यात्रा कांकरोली से गंगासागर 15 नवंबर 2011 में की। 1 जनवरी 2012 को गंगासागर पहुंचकर वहां का जल लाकर आते वक्त उज्जैन महाकाल के दर्शन करते हुए कांकरोली पहुंच प्रभु श्री द्वारिकाधीश के दर्शन करने के बाद राजसमंद झील में गंगासागर के पवित्र जल को प्रवाहित कर राजसमंद झील के लबालब होने की प्रार्थना की।

बढ़ती उम्र के कारण परिवार वालों ने उनसे ऐसी यात्रा और ना करने का वचन लिया, जिसे श्री नरेंद्र ने मानकर बाद में श्री द्वारकाधीश मंदिर के खासा भंडार में सेवाएं देना प्रारंभ कर दिया। प्रकृति और पर्यावरण प्रेमी श्री नरेंद्र की आध्यात्मिक रुचि भी गजब की थी। वो नित्य शिव चालीसा हनुमान चालीसा का पाठ किया करते थे, हनुमानजी के परम भक्त शिवजी के उपासक व श्री कृष्ण भगवान में आस्था रखने वाले श्री नरेंद्र नियमित पैदल सवेरे 3 बजे उठकर श्रीनाथजी के दर्शन करने पैदल दौड़कर या साइकिल पर जाते थे और मंगला के दर्शन करते थे और वहां से आकर नियमित श्री द्वारिकाधीश के दर्शन किया करते थे। अभिरुचि में वो 45 किलोमीटर तक की साइकिल यात्राएं भी किसी भी यात्रा में जाने से पहले कई महीनों तक अभ्यास के रूप में करते थे।

अपने जीवन काल में 62000 किलोमीटर से भी ज्यादा यात्रा करने का रिकॉर्ड बनाने वाले श्री नरेंद्र ने जीवनभर अविवाहित रहकर अपना जीवन बड़ी सादगी के साथ व्यतीत किया। वह देश के प्रसिद्ध पहलवान व रामायण सीरियल में हनुमानजी का किरदार निभाने वाले फिल्म अभिनेता दारासिंह से बहुत प्रभावित थे।

उन्हें स्थानीय व राज्य स्तर और राष्ट्रीय स्तर के कई सम्मानों से नवाजा गया, मगर उन्होंने अपनी यात्राओं के दौरान देशभर के लोगों द्वारा किए गए सम्मान व सहयोग को ही श्रेष्ठ सम्मान माना और उदारता पूर्वक उनका सम्मान किया। दूध और बादाम व श्रीनाथजी और द्वारिकाधीश का प्रसाद उनके पसंदीदा व्यंजन थे। नियमित सफेद ड्रेस पहनते थे। अक्सर मिलेट्री ड्रेस को भी पहना करते व देश के प्रति अपने जज्बातों को व्यक्त करते थे। हाथ में छोटा सा डंडा भी अक्सर उनके रहा करता और मोर पंख भी उन्हें बहुत प्रिय था। शौकिया तौर पर बांसुरी बजाया करते थे।

छोटे बच्चों से भी बहुत स्नेह रखते थे और हमेशा अपनी जेबों में चॉकलेट रखते थे और कहीं भी छोटा बच्चा मिले, उन्हें तुरंत निकाल कर चॉकलेट बांट देते थे। श्री द्वारकेश व्यायामशाला से अपने जीवन की यात्रा शुरू कर अंतिम समय के कुछ सालों में श्री द्वारकाधीश जी की गौशाला में गौमाता की सेवा भक्ति भाव में रमकर के सेवा का पुण्य कमाया। जवानी के दिनों में 15 वर्ष तक शहर की एक प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान बोम्बे टी सेंटर पर ईमानदारी व कर्तव्यनिष्ठा से कार्य किया। जीवनभर नियमित साइकिल चलाने की वजह से उनके पेट के एक हिस्से में एक मेद रूपी गांठ उभर आई थी, जिसने कैंसर का रूप ले लिया। उसका ऑपरेशन कराने के बाद गांठ को तो निकाल दिया, मगर कैंसर पूरे शरीर में फैल गया और दवा से वो अपना बाकी जीवन निकालते रहे। मगर फिर भी नियमित गौशाला जाकर कार्य किया करते थे।

11 अगस्त को अस्वस्थ होने के बावजूद नौचौकी की पाल पर अपने अनुज हेमंत के साथ जाकर राजसमंद झील में आते जल की आवक का नजारा उन्होंने अपनी आंखों से देखा और हर्ष व्यक्त किया। यह इत्तेफाक कहेंगे या उनकी आस्था का चमत्कार कहे, उनकी मृत्यु के एक महीने बाद उसी वर्ष 2017 में राजसमंद झील में चादर चल गई थी। हरिद्वार में उनके गुरुजी से मिलने की इच्छा मन ही मन ले कर 13 अगस्त 2017 को बिना घर वालों को बताए ही बस द्वारा हरिद्वार में स्वर्ग का आश्रम स्थल पहुंच गए और फोन पर अपने वहां होने की जानकारी दी।

16 अगस्त 2017 को तबीयत ज्यादा खराब होने पर उन्हें वहां के स्थानीय अस्पताल में भर्ती कराया गया। इलाज के दौरान ही उसी दिन हरिद्वार में ही 60 वर्ष की उम्र में उनका स्वर्गवास हो गया। शायद उन्हें पहले ही मालूम चल गया कि मेरे जीवन के कुछ ही दिन शेष बचे हैं, तो वो अपने विवेक से निर्णय लेकर हरिद्वार पहुंच गए।

उनके निधन की सूचना पर 17 अगस्त को परिवार के अन्य सदस्य वहां पहुंच गए और वही उनका अंतिम संस्कार हरिद्वार में परिवार के पंडा श्री राकेश व जीतू तुमड़ीवाला के सानिध्य में सारी व्यवस्थाएं जुटाकर मंत्रोचार व पारिवारिक विधि विधान से किया गया। उनके पिता श्री मोहनलाल की मृत्यु उनकी मृत्यु के 8 महीने पहले ही चुकी थी।

वह अपने पीछे अपनी माता पार्वतीदेवी अपने बड़े भ्राता महेशचंद्र अपने अनुज मणिकांत हेमंत भारत भूषण व भतीजे भतीजी सहित भरा पूरा परिवार व अभिन्न मित्र गोपाल टेलर, यशवंत शर्मा, विनोद सनाढ्य, चंदू पालीवाल, गोविंद सनाढ्य, नंदू पालीवाल, ओमप्रकाश पालीवाल एवं अन्य उनके प्रशंसकों को छोड़कर इस दुनिया को अलविदा कह गए, मगर आज भी शहरवासियों की स्मृति में उनकी यादें ताजा है ।

माटी का लाल कॉलम में **श्री नरेन्द्र पालीवाल** की उपलब्धियों का बखान करते हुए मैं भी अपने आपको गौरवान्वित महसूस करते उनके व्यक्तित्व को नमनकर अपने शब्दों और भावों की अभिव्यक्ति से तहदिल से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

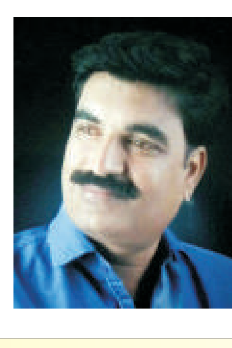

सूर्य प्रकाश दीक्षित
काव्य गोष्ठी मंच, राजसमंद
मो. 94146-21730

राजस्थानी केणावतां

भाषण, चाटण अर उद्घाटण, चौथो गुण झूठो आस्वासन।
कर पड़पंच, मंच पे गाजे, वो कलजुग में नेता वाजे।।

अर्थात् – जिस आदमी में भाषण देने की कला आ जाए, जो झूठे आश्वासन देकर लोगों को बहका सके तथा उद्घाटन कर नाश्ते– पानी करता फिरे। वही पड़पंची मनुष्य कलयुग में नेता माना जाता है।

जननी जणे तो अस्या जण, के दाता के शूर।
नीतर रहिजे बांझड़ी, मती गंवाजे नूर।।

अर्थात् – कवि मां से कहता है कि है माता! तू पुत्र पैदा करें, तो या तो दानदाता पैदा करना अथवा मातृभूमि की रक्षा करने वाला वीरपुत्र को जन्म देना। अन्यथा निपूती रहना ही ठीक है।

घणा बखाण्या थोबड़ा, लिखिया घणा प्रलाप।
वीरां रा गुण नी लिख्या, कस्या कवि हो आप।।

अर्थात् – हे कवि! तुमने कई सुन्दरियों पर कविताएं लिखी। कई लोगों को खुश करने में खुशामदो में काव्य लिखा, परन्तु वीर लोगों पर कुछ भी नहीं लिखा तो तुम कैसे कवि हो, हमें आश्चर्य होता है।

शूर नी देखे टीपणो, सुकन नी देखे शूर।
मरणां सूं मंगल गिणे, समर चढ़े मुख नूर।।

अर्थात् – बहादुर वीर मातृभूमि की रक्षार्थ निकलता है, तो कोई मुहूर्त या शुकून नहीं देखता है। वह तो रण में जाने की उत्सुकता में उतावला हो रहा है, खुश है।

कहवे जनता राज है, हाय घणो अंधेर।
जनता री डुगली वणी, नेता वेग्या ढेर।।

अर्थात् – लोकतंत्र को अब जनता का राज्य कहना सही नहीं लगता है। क्योंकि अब घर घर में नेता पैदा हो गए हैं, जिनके आगे जनता नगण्य हो गई है।

जब 15 अगस्त पे नेताजी झंडो फहरायो

रजनीश आश्रम पे आचार्य श्री रजनीश आपणा चेलां ने उपदेश कर रीया हा, तो पास री बस्ती में माइक री जोरदार आवाज आती देखर एक चेलो बोल्यो– गुरुदेव! अणी माइक री तेज आवाज रे आगे आपरा प्रवचन में बाधा आईरी है। माइक री आवाज कम करा दी जावे, तो कस्यान रेवे? बात ज्यादा उठती देखर आचार्य रजनीश बोल्या– 'भाई! ये मौसमी नेता है, बरसाती मेढ़का री न्यान, जो बरस में दो दाण, आपणी ऊर काढे है। एक तो 26 जनवरी अर15 अगस्त रे दन'। अणां ने बोल्वा दो, नी तो अणा रो पेट फूली जाई। आचार्य व्यंग्य रो किस्सो कियो। वे आगे बोल्या– तो सुणो एक नेता जी जद 15 अगस्त पे झंडो फहरायो, वणी रो सही किस्सो– आचार्य जी बोल्या– एक नेताजी ने 15 अगस्त पे झंडो फहराणो हो। वणा एक दन पेला शाम रा चपड़ासी ने हुकम दीदोक, घर सूं झंडो ले जायर अस्कूल रा पोल पे बांध आजे।

14 अगस्त सांझ वेला रा मुंह झांकला में चपड़ासी नेताजी रा घर सूं पेटी में सूं एक झंडानुमो कपड़ो ले जायर स्कूल रा लाग्योड़ा झंडा रा उंडा पे बांध आयो। दूजा दन नेताजी प्रात: 8 वजे ध्वजारोहण करवां सजधज ने घर सूं निकल्या। स्कूल में गांव रा हेंग लोग, टाबर नेता ने आताई भारत माता री जै बोल्या। नेताजी जोश में आयर झंडा री डोर खींची तो डोरी सूं बंध्योड़ो झंडो फहरावा लागो।

नेताजी बोलवा लागा– देखो भाया! ईं झंडा ने फहरातो देखरे सीमा पे जवाना री नशां फड़फड़ावा लाग जावे। म्हां लोगां रा दिल धड़क लाग जावे अर हर भारतीयां रो सीनो गरब सूं चौड़ो व्हे जावे है। ई झंडा पे म्हने गर्व है।

नेताजी ने जोश सूं बोलता देखर लोगा री निजर झंडा पे पड़ी तो कईह्व देखे के झंडा री जगा ध्वज रा डंडा पे एक रंगीन पेटीकोट लहराय रीयो है। लोग हंसवा लागा तो नेताजी ऊपर भाल्यो, बोल्या– वो चम्पो चपड़ासी कठे है? बुलावा बीन। ओ म्हारी घरवाली रो पेटीकोट अठे कीतर आयो?

मंच सूं बिनाई राम– राम नेताजी उतर भागा। अरे भाई! अणां नेता ने आज रे दन होंश थोड़ेई रेवे। यांने तो बरस में राष्ट्र रे नाम दो दन टुंट्या निकालना है, सो निकाल रिया है। आचार्य रजनीश पाछा प्रवचन देवा लागी ग्या। अणीरा चेलावा में हंसी रो दौर चालतो रियो। रजनीश रा चेला में सूं आवाज आई "करि पड़पंच मंच पे गाजे, वो कलजुग में नेता वाजे।"

फतहलाल गुर्जर 'अनोखा'
वरिष्ठ साहित्यकार
जाट गली, कांकरोली
मो. 99286-25757

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
सम्पर्क : 94142-39648

Why Civic Sense?

Hello Bro, wear your mask, the policeman is coming towards you.

Hey pal, cover your face the policeman is standing on the road.

Don't go without a mask, asked mom to her son going out for grocery but he left saying who is there to see just outside the colony.

Traveling from one place to another, don't inform the administration, or I will be kept at the quarantine centre for 14 days.

A patrolling jeep could be seen roaming around and making announcements like, put your mask on your face, keep a distance. Do not go out unless it is essential. Moreover, the administration had to arrange police to make people stay at home. Almost all roads and major points had the presence and people were beaten even.

All the situations observed during the recent past months of COVID-19 communicate a force to follow something. Why? Why a policeman on duty when it is a complete lockdown? Why a mask on the face because a policeman is coming towards you? Why, 'who looks just outside the colony? And why not because it is a must for own safety? Why fear, why pressure, why a force behind and not respecting the law and orders?

These situations communicate the lack of civic sense among the citizens. This is the high time to take responsibility and inculcate the civic sense in youngsters.

Generally, people are born with five senses, but none is born with CIVIC SENSE and this is taught by the adults in the same way we teach them to speak, eat, walk, read & write. Though a child can eat, speak but adults teach him what to eat for good health and the same way words and languages to express. In the same way, it is essential to inculcate civic sense in children.

Civic sense simply means social ethics, the unspoken norms. I am sure you must have observed people driving expensive cars and often opening the door a bit and spit the tobacco on road, enjoying cookies & wafers in a lush green public park and throw the wrappers, traveling with lots of luggage but not having space to keep their wrappers and so throwing it out of windows, park the vehicles on the roadside and pee and the list may have end number of examples around us.

It's not about keeping public places or property clean but also abiding with law, respecting others and their opinion, having etiquettes. The spit marks on roads, urine, random garbage and

overflowing sewers at every corner reflect the actual sense of responsibility. A few years back Indian Govt. started campaigns in the name of 'Swachchh Bharat Abhiyaan' Nirmal Ganga etc but these were actually not dirty because someone didn't clean but because we made. None is ready to accept the dirt and grime and at the same time not willing to take the responsibility. And simply by accusing others and want somebody to clean is not going to work. We need to bother about the needs of others as ignorance is harmful to the self & society both in the long run.

Civic behavior is not paid much attention to. Since both parents & teachers are focused and worried more about the academic performance of a child, they do not bother much to instil civic sense and the importance of it. Civic sense is also something mistaken as beneficiary service for someone else not for self. Ancient civilizations had taken upon themselves the responsibility of propagating moral teachings through stories. Be it the Holy books Ramayana, Geeta or Quran, Bible, all stand as the major source of inculcating a deep sense of moral values, kindness, compassion, generosity, non-violence, self-sacrifice, charity, etc. and exemplify the dos and don'ts of life. Civil sense comes from a sense of belongingness.

The school curriculum must have an equal focus on building ethical standards, value formation, character building, etc. Being parents & teachers, we need to address this problem in a pro-active way and need to set the example through our own life since children do not learn what we say but what we do. Let's help ourselves to see a generation having better civic sense, a sense of ownership and a sense of accountability, not the force working behind.

Let's work today for a better tomorrow where no traffic police make a challan because the bike rider is not wearing a helmet, one is reminding to use a seat belt while driving, none spits on roads, throwing garbage on the roadside, and so on. Let them have the right to develop a sense of responsibility and help them to grow.

Today's responsible children only will become responsible citizens tomorrow.

See you.

Manisha Lashkari
Principal
Smart Study International School Nathdwara

मौसमे एडमिशन

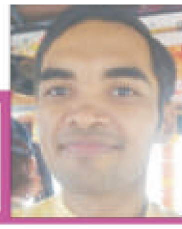

पीयूष कुमार द्विवेदी 'पूतू'
सहायक प्रोफेसर हिंदी विभाग रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय यूपी 8604112963

वैसे तो गांवों की दीवारें सूनी ही रहती हैं, किंतु दो वक्त इनमें ऐसा रंग चढ़ता है कि देखते ही बनता है। एक जब चुनावी मौसम आता है, तो इनमें रंग छलक पड़ते हैं। कहीं नीले रंग में बना हाथी नजर आएगा, तो कहीं तिरंगे में पंजा रंगा दिख जाएगा। कहीं साइकिल अपना रंग जमाती है, तो कहीं कमल खुशबू नहीं रंग बिखेरेगा। चुनावी माहौल में दीवारें कैनवास सी प्रतीत होती हैं। चुनावी बहारें दीवारों को पांच साल बाद मयस्सर होती हैं, लेकिन एक मौका ऐसा भी है, जो इन्हें हर वर्ष प्राप्त होता है, जब इन पर बहारें छाती हैं, तो इनकी खूबसूरती में चार चांद लग जाते हैं। वह है जून के अंतिम एवं जुलाई के प्रथम सप्ताह के मध्य की अवधि। जब दीवारों की कायाकल्प हो जाती है।

जी हां, यह वह वक्त होता है जब शिक्षा क्षेत्र में रंगों का मौसम आता है। जिस प्रकार वर्षा ऋतु में जगह- जगह कुकुरमुत्ते अपने दीदार देने लगते हैं। ठीक उसी तरह इस कालावधि में गली- मोहल्लों में नर्सरियों का प्रकटीकरण होता है। आजकल शिक्षित बेरोजगारों की इतनी बहुतायत है कि एक दो हजार में बी.एड. एएम.एड. अथवा मास्टर डिग्रीधारी अध्यापक- अध्यापिकाएं आसानी से मिल जाते हैं। लड़कियों को इसमें भी छूट है, उनके पास अगर ब्यूटी है तो इंटरपास से भी काम चल जाता है, क्योंकि मॉर्डन बच्चों का सौंदर्यबोध पालने में जग जाता है और प्रबंधकों को इसमें महारत हासिल होती है।

यह बात केवल निचले स्तर तक ही सीमित नहीं है, बल्कि कॉलेज और डिग्री कॉलेजों पर सौ फीसदी फीट बैठती है। प्राइवेट कॉलेज एवं डिग्री कॉलेज सही मायने में शिक्षालय न होकर धनार्जनालय बन गए हैं।

एक दिन मेरे एक मित्र बोले- भाई साहब! अगर आपके पास पैसा हो, तो बताइए मेरे पास उसे दस गुना करने का फार्मूला है। हमने आंखें चौड़ी करके कहा- अरे भाई! क्या आंख के अंधे गांठ के पूरे समझ रहे हो हमें? क्या कोई जादुई छड़ी झटक लिया है, जो शेखी बघार रहे हो? इस प्रकार का दावा तो कोई बीमा कंपनी या बैंक भी नहीं करेगी। वो बोले- भाई जान! आप कलम घिसाई तो कर रहे हैं, लेकिन लगता है दिमाग मोटा हो गया है। एक सीधा- साधा फार्मूला यह है कि एक कॉलेज खोल दीजिए बस, लक्ष्मी मइया खुद-ब-खुद मेहरबान हो जाएंगी । ज्यादा हाथ- पैर पटकने की भी आवश्यकता नहीं है। विज्ञापन का जमाना है, जमकर प्रचार करवा दीजिए बस, आपका कॉलेज चलने ही नहीं कुलांचे भरने लगेगा। बड़े- बड़े फ्लैश चौराहे- चौराहे टंगवा दीजिए, पोस्टरों से पाक साफ दीवारों के दामन को दागदार करवा दीजिए। लाउडस्पीकर लगी जीप को धूल भरी गलियों के चक्कर दौड़ा दीजिए। दो चार बार अपने अल्प वेतनभोगी अध्यापक- अध्यापिका को भेज दीजिए। हर उस घर में जिसमें पढ़ने योग्य बच्चे हों, इसी बहाने चाय-पानी भी हो जाएगा और अभिभावकों के मन में यह बात घर कर जाएगी कि अमुक कॉलेज के लोग हमारे यहां आएं हैं। इसलिए हम अपने बेटे या बेटी का एडमिशन वहीं कराएंगे।

गांव के हर घर की दीवार पर पोस्टर दिख जाएंगे। भिन्न-भिन्न नाम भिन्न- भिन्न पोस्टर लेकिन इन सबमें कुछ बातें समान मिलेंगी। जैसे उत्तम परिवेश, योग्य शिक्षक- शिक्षिकाओं द्वारा शिक्षण, वाहन की सुविधा, खेलकूद की व्यवस्था, शानदार शैक्षिक भवन, कम्प्यूटर प्रशिक्षण की व्यवस्था आदि। इन सुविधाओं के समान होने के बावजूद कुछ गहरा राज भी होता है, जो उजागर नहीं किया जाता है। वह होता है शुल्क का निर्धारण। एडमिशन के समय कई प्रकार के गिनाएं जाते हैं, जिनमें एडमिशन शुल्क, पुस्तकालय शुल्क, फर्नीचर शुल्क, जल शुल्क, संडास शुल्क, परीक्षा शुल्क वगैरह- वगैरह।

इनके अतिरिक्त भी एक शुल्क है जो सबसे महत्वपूर्ण है, जिसके बिना सब शुल्क धूरि समान। पूरे वर्ष की मेहनत एक तरफ और यह शुल्क एक तरफ। आप सोच रहे होंगे कि ऐसा कौनसा शुल्क

व्यंग

है, जो हमें नहीं पता, केवल तुम्हें ही मालूम है। अरे जनाब नींव का पत्थर किसी को दिखाई थोड़े ही देता है, उसे देखने के लिए मकान की जड़ें खोदनी पड़ेगी और यह काम आपके बस का नहीं है, क्योंकि आपके अंदर प्रेम एवं भय है। कबीर जैसे अब घर फुक्कड़ तो हैं नहीं आप। आपको बेचैन देखकर लगता है बताना ही पड़ेगा। जी हां, वह है सुविधा शुल्क। सभी शुल्कों का आधार, अब आप कहेंगे कि इसका उल्लेख तो शुल्क सूची में नहीं है। आप किस मुंह से कह रहे हैं? हां भाई साहब, बिल्कुल दुरुस्त फरमाया आपने, इसके बखान के लिए एक मुख की नहीं हजारों की जरूरत है। रही बात शुल्क तालिका में उल्लेख न होने का तो यह शुल्क हीरा है और हीरा कोयले की काली खान में दबा रहता है। आवश्यकता होती है निकालकर तराशने की।

आइए इस शुल्क के बारे में कुछ बहुमूल्य मालूमात हासिल की जाए। जैसा कि नाम से स्पष्ट हो रहा है कि यह शुल्क सुविधा के बदले में ली जाती है। कॉलेज के द्वारा यह शुल्क परीक्षा के दौरान लिया जाता है। आपके बच्चे को जैसी सुविधा चाहिए वैसा शुल्क देना पड़ता है। गैस पेपर, गाइड, मौखिक सुविधा सबकुछ हासिल हो जाएगी और अधिक शुल्क देंगे, तो कॉपी- पेपर घर तक पहुंच जाएंगे। कई अन्य सुविधाएं भी हैं, मसलन आपका बेटा परदेश कमा रहा है और यहां परीक्षा शुरू हो गईं, तो घबराने की कोई बात नहीं ऐसी भी सुविधा है कि आपके बेटे की प्रतिमूर्ति पेपर दे देगा। बस आपको शुल्क देना होगा। कमाल है सुविधा शुल्क का जो असंभव को भी संभव कर देता है।

लघु कथा

मां की आस

पंकज की दादी 15 अगस्त की सुबह जल्दी से ही तैयार हो गई थी। जैसा कि उसे मालूम था कि 15 अगस्त पर सभी टीवी के समाचार चैनलों पर भारत देश के सैनिकों को दिखाया जाता है। हर बार की तरह वह भी अपने पोते पंकज की एक झलक पाने के लिए टीवी के सामने बैठ गई। 65 साल की दादी को यह उम्मीद थी कि किसी न किसी चैनल पर सैनिकों के इंटरव्यू के बीच में उसके फौजी पोते पंकज की झलक भी उसको दिखाई देगी और उसी इंतजार में उन्होंने सुबह से ही टीवी चला लिया।

अचानक पंकज के पिता उनके कमरे में आए और उन्होंने अपनी मां की तरफ गुस्से से देखा और बिना कुछ कहे काफी गुस्से के साथ कमरे से बाहर निकल गए। पंकज की दादी का अभी पूरी तरह टीवी पर ही ध्यान था। कुछ समय बाद पंकज के पिता फिर कमरे में आए। इस बार अपनी मां से वह गुस्से से बोले क्या मां तुम 26 जनवरी और 15 अगस्त पर टीवी चला कर बैठ जाती है। क्यों बार- बार भूल जाती हो कि तुम्हारा पोता पंकज दो साल पहले बॉर्डर पर दुश्मनों से लड़ते हुए शहीद हो चुका है।

यह कहते हुए पंकज के पिता की आंखों में आंसू आ गए और पंकज की दादी की आंखे भी काफी नम थी, लेकिन पंकज की दादी ने कहा बेटा मुझे टीवी पर जो भी सैनिक दिखाई देता है। मुझे

उसमें अपना पोता ही दिखाई देता है और उन्होंने बड़े प्यार से अपने बेटे को गले से लगा लिया। इसके बाद मां और बेटे दोनों ही नम आंखों से टीवी में आ रहे समाचार देखने लगे।

नीरज त्यागी
65/5 लाल क्वार्टर राणा प्रताप स्कूल के सामने गाज़ियाबाद, उत्तरप्रदेश 201001
मो. 9582488698

लॉकडाउन के साइड इफेक्ट

विनोद कुमार 'विक्की'
व्यंग्यकार, बिहार
मो. 77659-54969

प्राय: फिल्मों में देखता और सुनता था, जब कोई गिरहकट या छंटा हुआ बदमाश पुलिस के हत्थे चढ़ता था, तो उसे लॉकअप में बंद रखा जाता था। 'अप' के बारे में तो सुना था किंतु 'डाउन' सुनने और देखने का अनुभव कोरोना नामक अदृश्य सूक्ष्मजीव के आगमन से ही हुआ। लॉकडाउन का अभिप्राय ऐसी घटना से है, जिसमें सामाजिक प्राणी अर्थात सभ्यजनों को अपने घर (जिनको घर है, या फिर जिन्हें इंदिरा आवास योजना का वास्तविक लाभ मिला है) की चारदीवारी में कैद रहना पड़ता है।

महामारी की महिमा से अपने जीवनकाल में पहली बार लॉक डाउन का सुख भोगने का अवसर और अनुभव हमें प्राप्त हुआ। लॉकडाउन के कारण यूं तो वैश्विक स्तर पर अपूरणीय आर्थिक नुकसान एवं सामाजिक नुकसान हुआ है, किंतु आज अपने स्वभोगित अनुभव के आधार पर हम आपको इसके साइड इफेक्ट के बारे में ऐसी जानकारी दे रहे हैं, जिसकी चर्चा किसी न्यूज चैनल पर डिबेट अथवा समाचार पत्र के आलेख में अब तक नहीं बताया गया है।

मेरी माने तो फैशन परस्त, भागदौड़ वाली हाइटेक जिंदगी में ठहराव और संस्कृति के वापसी का साइड इफेक्ट है लॉक डाउन!

जिस पर्यावरण को प्रदूषित और विनाश के लिए हम मानव का पदार्पण हुआ है, लॉक डाउन के कारण वह प्रकृति और वातावरण शुद्ध होता नजर आया। अब वातावरण शुद्ध होता रहा, तो मानव जीवन दीर्घजीवी होने लगेगा। फिर लंबी जिंदगी होगी तो लंबा संघर्ष होगा (क्योंकि जीवन ही संघर्ष है) धरम जाति के नाम पर लंबी जीवन आयु तक संघर्ष करना होगा। वैमनस्यता ज्यादा फैलेगा। मक्कार नेताओं के वादों को झेलना पड़ेगा।

इस प्रकार लॉक डाउन से दीर्घजीविता का दुख झेलना पड़ सकता है।

दूसरा साइड इफेक्ट यह है कि जिस परिवार के लिए जिन्हें हुलकी मारने की फुर्सत नहीं मिल पाती थी, उनके बीच ज्यादा से ज्याद समय तक झक मारना पड़ा है। बुढ़े मां बाप की तस्वीरें फेसबुक पर चेंपकर हजारों लाइक और कमेन्ट्स को बटोरने में जो आत्मीय खुशी प्राप्त होती है, वो खुशी उनके बीच रहकर उनके दुख दर्द को सुनकर और उनके परंपरागत आशीर्वाद को प्राप्त करने में कहां है। वैसे भी जो मजा परिवार की फोटो को सोशल मीडिया पर शेयर कर प्यार और

अपनापन जताने का का है, वो मजा परिवार के साथ लंबे समय तक रहने में कहां हैं।

आराम पसंद घरेलू स्त्रियों को लॉक डाउन के कारण कामवाली बाई के विकल्प रूप में नि:शुल्क घर वाला का सुख मिला, तो पति महोदय पर ऑफिस के वर्क फ्रॉम होम के साथ साथ वर्क ऑफ होम (झाड़ू-पोछा, खाना बनाना आदि) का दोहरा दबाव बना रहा। हालांकि इस साइड इफेक्ट का एक लाभ ये हुआ कि घर के काम में एक टहल नहीं बजाने वाले पुरुष भी घरेलू कार्य में दक्ष हो गए।

लॉकडाउन से पूर्व टीवी पर कपिल शर्मा शो, क्राइम पेट्रोल एवं सावधान इंडिया की रीपीट टेलीकास्ट को झेलना पड़ता था, किंतु लॉकडाउन के कारण सभी चैनलों पर रीपीट टेलीकास्ट का थर्ड डिग्री टार्चर झेलना पड़ा।

लॉकडाउन के कारण सड़कों पर होने वाले एक्सीडेंट, मर्डर, अपराध, चोरी, डकैती, गैंगरेप आदि के घटित नहीं होने से न्यूज चैनल पर ब्रेकिंग न्यूज आना बंद हो गया। फलस्वरूप सनसनी और ब्रेकिंग न्यूज देखने और दिखाने वालों में घोर निराशा देखी गई।

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
करें कॉल : 94142-39648

लॉकडाउन के दौरान दिनभर चौपाल से लेकर चम्मन चाय वाले की दुकान तक वैश्विक राजनीति पर ज्ञान पेलने वाले निठल्ले बुद्धिजीवियों का घर में बंद रहने के कारण बौद्धिक संपदा का भारी नुकसान हुआ है। वहीं दूसरी ओर मुहल्ला की सामाजिक महिलाओं का आपसी मेल-जोल तथा पूजा-पाठ, विवाहोत्सव आदि सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन ना हो पाने के कारण छिद्रान्वेषी महिलाओं, मुंहफुल्ला जीजा/ फूफा, पौवा मारकर नागिन डांस पर अनलिमिटेड परफॉर्मेंस देने वाले बारातियों का टैलेंट डाउन होने लगा। रधिया के बहू की चर्चा, फलाना के बहू-सास, ढिमकाना के ननद- भौजाई की निंदा आदि जैसी पुनीत सामाजिक संप्रेषणीयता पर लगाम सा लग गया।

महामारी पर कथा कविता व्यंग्य लिखने वाले औजस्वी साहित्यकारों की प्रजाति का थोक भाव से पदार्पण हुआ, जिससे कालजयी रचनाकार प्रेमचंद, परसाई, बच्चन आदि साहित्यकारों का अस्तित्व खतरे में जाता दिखाई पड़ा। मंच पर चाय की चुस्की और महिला कवयित्री के साथ मसखरी करने वाले मंचीय साहित्यकार को घरवाली की उपस्थिति में घर से संचालित ऑनलाइन कवि सम्मेलन में साहित्यिक रस का वो स्वाद नहीं मिल पाया, जिसके लिए वो प्रदेश की सीमा लांघकर गोष्ठी में जाया करते थे।

पांच वर्षों में यदा- कदा दिख जाने वाले जनता के कथित शुभचिंतक विधायक/ सांसद का लॉक डाउन पीरियड में पुरी तरह से विलोपन हो गया। सीएम साहब टीवी और समाचार पत्र में नजर आने लगे। बहरहाल उपरोक्त साइड इफेक्ट के अलावा लॉक डाउन के दौरान आत्मनिर्भर भारत के घर घर से ठीक ठाक कलाकार की बजाय टिक टॉक कलाकार, हर घर के किचन से सेफ (रसोईया), साहित्यकार, नचनिया, उपदेशक सह स्वघोषित चिकित्सक (वीडियो जारी कर महामारी से बचाव का नुस्खा देने वाले) की बहुतायत मात्रा में उत्पत्ति हुई, जिसे लॉक डाउन का अतिरिक्त लाभ के रूप में देखा जा सकता है।

बनो सच की ताकत
जयवर्द्धन पत्रिका
आपकी खबर
अब आपकी जुबानी..
अब आप
भी भेज सकते हैं
खबर

ताजा खबरों से
अपडेट रहने के लिए
SUBSCRIBE करें
YouTube
Jaivardhan
News

बनो सच की ताकत

जयवर्द्धन पत्रिका

आपकी खबर

अब आपकी जुबानी..

अब आप

भी भेज सकते हैं

ताजा खबरों से

अपडेट रहने के लिए

SUBSCRIBE करें

YouTube

Jaivardhan

News

समसामयिक प्रश्नोत्तरी

परितोष पालीवाल

82338 82818

1. हाल ही में स्पेसएक्स ड्रैगन क्लू कैप्सूल के जरिए कौनसे दो वैज्ञानिक अंतरिक्ष में पहुंचे ?
2. हाल ही में किस प्रकार के उद्यम को सशक्त बनाने के उद्देश्य से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने **मिशन चैंपियंस** लांच किया ?
3. कोरोना महामारी के बीच आम चुनाव कराने वाला पहला यूरोपीय देश कौनसा बना है ?
4. BCCI का मुख्य कार्यकारी अधिकारी (CEO) किसे नियुक्त किया गया है ?
5. हाल ही में संजीता चानू को अर्जुन पुरस्कार दिए जाने की घोषणा की गई है। संजीता चानू किस खेल से संबंधित है ?
6. हाल ही में प्राप्त राफेल विमान हमें किस देश से मिले हैं ?
7. श्रीलंका के आम चुनाव में हाल ही में किसने जीत हासिल की है ?
8. कौनसा देश कोरोना वायरस की पहली वैक्सीन का रजिस्ट्रेशन कराने के लिए 12 अगस्त को तैयार है ?
9. विश्व आदिवासी दिवस किस दिन मनाया जाता है ?
10. किस देश के प्रधानमंत्री हसन दियाब ने हाल ही में इस्तीफे की घोषणा की है ?
11. कोविड- 19 प्रबंधन सूचकांक में किस राज्य को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है ?
12. क्षेत्रफल की दृष्टि से विश्व का सबसे बड़ा सोलर पार्क कहां है ?
13. अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ ने ग्रेट इंडियन बस्टर्ड नाम के इस पक्षी को गंभीर रूप से लुप्त प्राणियों की सूची में डाला गया है। किस राज्य का राज्य पक्षी है ?
14. हाल ही में 59 चीनी एप पर बैन करने के बाद और कितने चीनी ऐपों को बैन किया गया है ?
15. नई शिक्षा नीति लागू होने के बाद मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम क्या हो जाएगा ?
16. अयोध्या में राम मंदिर का भूमि पूजन कब व किसने किया ?

उत्तरमाला

(1) डगसल हर्ले और रॉबर्ट बेनकेन (2) सूक्ष्म लघु मध्यम उद्यम (3) सर्बिया (4) हेमांग अमीन को (5) भारोत्तोलन से (6) फ्रांस से (7) श्रीलंका पोदुजना पार्टी (SLPP) को लगभग दो तिहाई बहुमत मिला है, जिसके साथ ही महिंदा राजपक्षे का श्रीलंका का एक बार फिर से प्रधानमंत्री बनने का रास्ता साफहो गया है। महिंदा के भाई गोतबया राजपक्षे पहले ही श्रीलंका के राष्ट्रपति हैं। (8) रूस (9) 9 अगस्त को (10) लेबनान की राजधानी बेरुत में शक्तिशाली धमाके के बाद लोगों की मांग के आगे झुकते हुए प्रधानमंत्री हसन दियाब ने इस्तीफे की घोषणा की है (11) राजस्थान को (12) जोधपुर के भडाला गांव राजस्थान में (13) राजस्थान का (14) 47 ऐप को (15) शिक्षा मंत्रालय (16) 5 अगस्त 2020 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा

हल्दीघाटी के पास बनास नदी में बहाव के मायने

बनास नदी के बहाव से मेवाड़ मुस्कुरा उठा है। सूखा और सूखे के बाद की आशंकाओं से घिरे इस अंचल में बनास ने कुंभलगढ़ के पास वेरों का मठ से निकलकर बाघेरी का नाका बांध को चुंबन क्या दिया, लोग देखने उमड़ पड़े।

सच में बनास जिसे हम सब वनास = वन की आस कहते हैं और जिसे व्यास मुनि ने मार्कंडेय पुराण में वर्णाश कहा है। मेवाड़ की आशा है। बहती है तो जल देती है और थमती है तो बजरी का भंडार हो जाती। कभी रास्ता भी दिखाती।

यदि कोई बनास- बनास चले तो आधा मेवाड़ देख ले। शेष भाग देखने के लिए बनास की बहन बेड़च का बहाव क्षेत्र नापना होगा। बेड़च मेरी मां है, जिसने दूध सरीखे जल और अनमोल अन्न से पाला, पोसा और फिर ममतामयी मौसी बनास के पास भेज दिया, जहां पढ़ाई- लिखाई हुई। दोनों का मुझे इतना प्यार मिला कि बनास बाएं रहीं, तो बेडच दाएं। दोनों ने मेरी अंगुलियां पकड़ कर मेवाड़ दिखाया। अरावली की इन नदियों के जल की प्रशंसा चरक संहिता से ज्यादा कहां मिल सकती है।

गर्ग मुनि के लिए इसके उद्गम स्थल का जरगा पर्वत बड़ा सहारा रहा और प्रलय वेला में उसे आश्रय के योग्य माना। यह पारियात्र की पूर्वी धारा है, जिसके आसपास भागवत धर्म खूब फला। मथुरा से चले गोवर्धननाथ बनास के मुक्त बहाव को पाकर यमुना बिसार गए। यही क्षेत्र श्री विहार सा लगा और इसके स्वामी क्या हुए, श्रीनाथ हो गए। इसी नदी के झरखंडी बरखंडी के बीच, 1857 में तांत्या टोपे ने स्वाधीनता के लिए संघर्ष की पताका फहराई और सात ध्वजा के श्रीनाथ से सातों ही पुरियों के इस ध्वज तले आने का निवेदन किया।

बनास का जल लेकर यहां के गोस्वामी ने गोप, ग्वाल के साथ गोवर्धननाथ के प्रण की तरह संकल्प उठाया। बनास के ही तटवर्ती कोठारिया ठिकाने के जोधसिंह ने तात्या टोपे के साथ हाथ मिलाया। रकमगढ़ के मैदान में वे सब वीर वेश में उतर आए, जिन्होंने बनास का पानी पीया था। यहीं खान तोपची की मां ने अंग्रेज सेना के खिलाफ पहला पलीता लगाकर बनास के बाशिंदों का इरादा बुलन्द किया। बनास पर बगावत की बात को सलूंबर ने बढ़ाया। बैसाखी पूनम पर इसी बनास के किनारे मोती लाल तेजावत ने मेवाड़ के किसानों को बैठ बेगार न करने का प्रण दिलाया और प्रजा मण्डल

परवान चढ़ा। इसके जल से सिंचित भूमि में होने वाले कपास की कताई के लिए चरखा के गीत गांव- गांव गूंजे। माणिक्यलाल को नेतृत्व की क्षमता इसी बनास से मिली।

बागौर के पास, जहां बनास नदी घाटी सभ्यता के अवशेष मिले, से ही मई-जून 1576 ई. में मानसिंह ने मुगल सेना के साथ खमनोर, गोगुंदा का रास्ता लिया और बीच राह ही हल्दीघाटी का युद्ध रचा गया। यह भी बड़ा सच है कि नदी तट पर जितने भी गांव हैं, वहां भी मुठभेड़ हुई और लोग राड़ में खेत रहे, लूटपाट में लोगों से ताम्रपत्र कब्जे में किए गए। जो लोग राड में मरे, वे राडा कहलाए। इस नदी के बहाव वाले हर गांव में वे जोधा, कबंध अब भी राढा बावजी के नाम से पूजे जाते हैं। इस नदी के क्षेत्र का राजा सरयुत्ज कुरुक्षेत्र में सेना को लेकर पहुंचा था, जिसकी स्मृति महाभारत संजोए है। जहां बनास चंबल में गिरी, वहीं शकुन्तला का बचपन बीता और फिर भरत को जाया। अरावली के प्रेमाश्रु की यह धारा विंध्याचल में विहार का सुख लेती है और चंबल के चक्षुओं की साक्षी में गंगोदक होकर समुद्र शयन करती है। इन दिनों बनास का बहाव मेवाड़ की नालों में ताले देने लगा हैं, तो कई आशाएं जगी हैं।

श्रीकृष्ण जुगनू
वरिष्ठ साहित्यकार
उदयपुर, 96728-72766

Jio Glass : चश्मे से कर सकेंगे 3डी में वीडियो कॉल

विश्व पटल पर भारत भी इलेक्ट्रॉनिक्स आधारित उपकरणों के निर्माण में तेजी से कदम बढ़ा रहा है। भारत को अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूती देने के लिए इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का भारत में निर्माण करना अति आवश्यक भी है। इंटरनेट एवं सूचना प्रौद्योगिकी के युग में इस प्रकार के रोजमर्रा के कार्यों को सुगम करने वाले उपकरण अपना एक विशिष्ट स्थान रखते हैं और एक बड़ा व्यापार विकसित करने में भी सहयोगी होंगे। वर्तमान समय में जब हम चीन जैसे देशों से अपने व्यापारिक संबंधों को सीमित कर खत्म करने के निर्णय पर आ चुके हैं, तब इस परिवेश में देश में सॉफ्टवेयर, एप्स एवं हल्के इलेक्ट्रॉनिक उपकरण व उनके पाट्र्स का निर्माण विशेष पहलू बन जाता है। इसी क्रम में भारत में निर्मित जियो ग्लास आने वाले समय में नियमित ऑफिस कार्य, रक्षा एवं शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाने की संभावना वाला पहलू हो सकता है। पाठकों से निवेदन है, यह लेख

किसी कंपनी का विज्ञापन ना होकर आपको टेक्नोलॉजी से अवगत कराने का प्रयास मात्र है। jio का नवीनतम इनोवेशन, jio Glass, प्रौद्योगिकी के अत्याधुनिक पहलू पर है जो उपयोगकर्ताओं को वास्तव में सार्थक इमर्सिव अनुभव प्रदान करने के लिए सर्वोत्तम.इन.क्लास मिश्रित वास्तविकता सेवाएं प्रदान करता है।

जुलाई 2020 में आयोजित रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (आरआईएल) की 43वीं वार्षिक आम बैठक में जियो ग्लास को लॉन्च कर दिया गया। यह एक मिक्स्ड रियलिटी हेडसेट है, जिसको अपने फोन से कनेक्ट करके वीडियो कॉल्स, 3डी वीडियो कॉल में मीटिंग्स आदि कर सकेंगे।

जियो ग्लास का वजन सामान्य चश्मे के समान ही है। अत: यह किसी अन्य चश्मे की तरह है, जिसका इस्तेमाल आप अपनी आंखों पर लगाकर कर सकते हैं। इसमें कंपनी ने सेंसर, कैमरे आदि दिए हैं। जियो ग्लास आपके मोबाइल से कनेक्ट होकर आपको 3डी दुनिया का अहसास कराएगा।

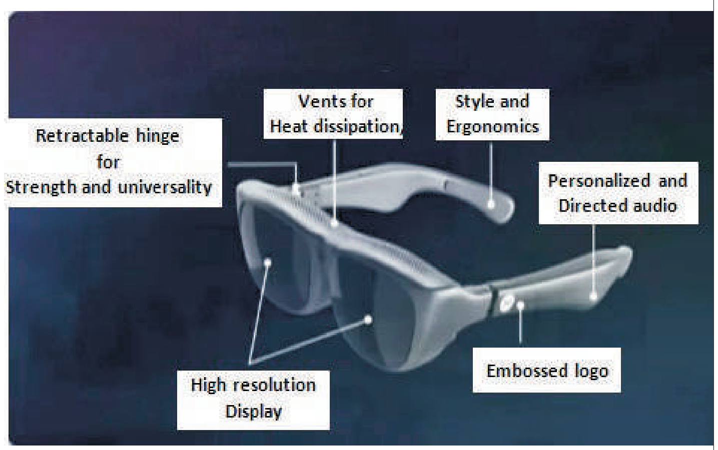

जियो की यह नई डिवाइस सभी तरह के ऑडियो फॉर्मेट्स को सपोर्ट करती है और इसमें कोई भी तार नहीं दिया गया है। इसमें कंपनी ने 25 तरह की मिक्स्ड रियलिटी ऐप्स भी दी हैं। जैसे–एंटरटेनमेंट, लर्निंग, गेमिंग, शॉपिंग आदि शामिल हैं।

जियो ग्लास टीचर और स्टूडेंट्स के लिए भी काफी फायदेमंद साबित हो सकता है। इसके जरिए वे 3डी वर्चुअल क्लासरूम का लुत्फ उठा सकेंगे। वहीं, इससे होलोग्राफिक सेसंश भी कर सकेंगे। वहीं, अगर टीचर को स्टूडेंट को किसी बिल्डिंग, पिरामिड आदि के बारे में बताना है, तो वह इसके जरिए से बच्चों को 3डी तकनीक के जरिए से अच्छी तरह से समझा सकेंगी। आने वाले कुछ समय में कंपनी से इसकी कीमत, फीचर्स और अन्य फायदों के बारे में जानकारी उपलब्ध हो सकती है। साथ ही इसकी आम आदमी के लिए उपलब्धता की जानकारी एवं बिक्री के माध्यम की भी जानकारी उपलब्ध होगी।

jio से एक व्यक्तिगत ऑडियो सिस्टम के साथ आता है और यह भी कहना है कि यह सभी मानक ऑडियो प्रारूपों का समर्थन करता है। यह एचडी गुणवत्ता वाला वीडियो प्रदान करता है और फिलहाल यह 25 से अधिक ऐप्स का समर्थन करता है।

रिलायंस jio Glass एक मिश्रित वास्तविकता (MR) Based होलोग्राफिक लेंस प्रणाली है, जो उपयोगकर्ताओं को विभिन्न कार्यों जैसे होस्ट कॉन्फ्रेंस कॉल, शेयर और प्रेजेंटेशन को देखने और अन्य चीजों के बीच चर्चा करने में सक्षम बनाती है। डिजाइन वार, जीयो ग्लास एक प्लास्टिक फ्रेम के साथ आता है, जिसमें दो लेंसों के बीच में एक कैमरा होता है। पीछे की तरफ इसके पीछे एक छोटा सा मंच है, जो संभवत: एमआर क्षमताओं और स्पीकर और इसके दो पैरों में पक्षों पर बैटरी प्रदान करेगा।

डिवाइस का वजन सिर्फ 75 ग्राम है और यह एक केबल के साथ आता है, जिसे कंपनी के नए लॉन्च किए गए एमआर ग्लास और इंटरनेट कनेक्टिविटी प्रदान करने के लिए एक स्मार्टफोन से जोड़ा जा सकता है। कुल मिलाकर डिजाइन काफी हद तक बोस फ्रेम के समान है, जो पिछले साल भारत में लॉन्च किए गए थे।

जहां तक कामकाज का सवाल है, उपयोगकर्ता सहकर्मियों के साथ होलोग्राफिक वीडियो कॉल कर सकते हैं, जो उनके 3डी अवतार में और नियमित वीडियो कॉलिंग प्रारूप में शामिल हो सकते हैं। एक बार जब उपयोगकर्ता किसी कॉल में शामिल हो जाते हैं, तो वे बड़ी वर्चुअल स्क्रीन पर प्रस्तुतियों को साझा कर सकते हैं और देख सकते हैं। इसके उपयोग के मामले का एक दिलचस्प पहलू यह है कि जीयो ग्लास उपयोगकर्ता कॉलिंग व्यक्तियों के लिए वॉयस कमांड का उपयोग कर सकते हैं। हालांकि यह स्पष्ट नहीं है, संभवत: कंपनी इस कार्यक्षमता को प्रदान करने के लिए अमेजन एलेक्सा या Google सहायक जैसे कुछ आभासी सहायक का उपयोग कर रही है।

रोज के ऑफिस के काम के अलावा, jio Glass का उपयोग जीयो के एमआर क्लाउड पर होने वाली वर्चुअल कक्षाओं के संचालन के लिए भी किया जा सकता है। जीयो ग्लास शिक्षकों और छात्रों को 3 डी वर्चुअल रूम में एक साथ आने और वास्तविक समय में हमारे श्रपव मिश्रित रियलिटी क्लाउड के माध्यम से होलोग्राफिक्र कक्षाएं संचालित करने के लिए बना रहा है। जीयो ग्लास के साथ, भूगोल, भौतिक विज्ञान जैस विषयों को सीखने के तरीके मे काफी विकास की सम्भावना संभव है।

अब मूल्य निर्धारण आता है। अभी तक जीयो ग्लास की कीमत या उपलब्धता का खुलासा नहीं किया है। हमें इसकी बैटरी क्षमता के बारे में कुछ भी पता नहीं है। उम्मीद है कि जब हम व्यापक सार्वजनिक रोलआउट के लिए तैयार होंगे, तो जीयो ग्लास के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करेंगे।

उल्लेखनीय रूप से, जबकि रिलायंस जियो ने अपने मिश्रित वास्तविकता संचालित स्मार्ट ग्लास, जीयो ग्लास को प्रदर्शित नहीं किया था, इसने अभी तक जीयो ग्लास की कीमत और उपलब्धता को साझा नहीं किया। हालांकि, उपयोगकर्ताओं को सस्ती कीमतों पर उच्च-अंत प्रौद्योगिकी लाने के लिए जीयो के प्रयास को देखते हुए यह अनुमान लगाना मुश्किल नहीं है कि जीयो फोन की तरह ही जीयो ग्लास की भी कीमत उपभोक्ता के बजट में ही होगी।

Ref: tech.hindustantimes.com

डॉ. संजय गौड़
प्रोफेसर, लेखक व साहित्यकार
भवानीनगर, कांकरोली
मो. 9784652469
sanjay.since@gmail.com

भूख नी जाणे हाणो अर नींद नी मांगे बिछावणो

पुराणा समिया री वातं अेक राज्य म्हे राजा रो राज हो। मलक मोटो साम्राज्य, हाऊ सुख सुविधा वाला महल। हुपातर राणीजी, हमझदार मंत्री, ताकतवर सेना, पड़ोसी राज्या म्हे मोकली धाक। चारु मेर सुख शांति, अमन-चैन। खावा पीवाऊं लगाइन कणी तरीका री अंचेकई अबकाई कोईनी। न तो कोई दुःख न कलेश कांटो।

रोजाना छप्पन भोग रा पकवान रो खाणो अर मखमली सेज परे हुवणो। पण सुख दुःख मईने बदली जई अश्यो कुण जाणे। राजा रे तो गजब री वीतवा लागी। न भूख लागे न तर (तरस), राते नामिक नींद भी नी आवे। राजवैद्य ऊं लगाईन देस देसांतर रा कतराई वैद्य अर जाण्या हमजिया आया पण कईज इलाज लाग्यो कोइनी।

राजा होच्यो प्रजा कने म्हारे जतरी रत सईबी नी है, तोई हगला खाई पी न नींद निकाली रिया है। म्हारे असयो कई वियो जो मुं वंचित हूं। थाकी हारी न राजा विचार कीदो क भूख अर नींद रो राज तो मनेइज ठा करणो पड़ी। दूजा दन भैंस बदली न राजा परबात पेली गेले विया। हिण्डता- हिण्डता राजमहलां ऊं घणा दूर नंदी रे ढावे ढावे जंगल हामी पोंच्या। जेठ रा दन, तपती धरती, लाय फुंकाता तावड़ा री भरी दुपेर म्हे थाक थकाईन रुंखड़ा री छाया देख न रिआम्बो लेवा लाग्या।

अतराक म्हे ठक-ठक-ठक री आवाज हुणी। अेक आदिवासी कराड़ो (कुल्हाड़ी) चलाईन टींडका फाड़ी रियो। राजा गौर कीधो, वणी आदिवासी फोरोक् धोवतियो पेरी राख्यो, डील परे गाबा कोइनी। पसीना म्हे तरबतर व्हेई रियो जो न्यारो। थोड़ीक् देर केड़े वणी डाल परुं हीरावण री पोटली लीधी अर खावा लाग्यो। खादा पचे नंदी नके आयो, हात धोया, पाणी पीदो अर छाया भाल न परो हुतो।

राजा यो सब अचंभा हाते देख रिया हा। वणा उंडो विचार कीधो के भूख वेवे तो मसालो रोटी परी भावे। छप्पन भोग वेववाऊंज भूख नी लागे। मेनत करा, हात पग चाले तो नींद परी आवे। नींद रे न तो महल चावे अर न मखमली विछावण। रिप्या देई न दवा खरीद सकां भूख कोइनी। रिप्या पया खरच न विछावणा मोल लेई सकां नींद नी। वात हांचीज है- ***भूख नी जाणे हाणो अर नींद नी मांगे विछावणो।***

जे.के.टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड
जेकेग्राम, कांकरोली (राज.)

स्वाधीनता दिवस
के शुभ अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं

JK TYRE
& INDUSTRIES LTD.

GM फायनेन्स & प्रोपर्टी

होम लोन, मोरगेज लोन, कार लोन, पर्सनल लोन, जीवन बीमा,
मकान प्लॉट, कृषि भूमि, क्रय-विक्रय हेतु सम्पर्क करें।

दिलीप जैन

मो. 9214384205, 9602997715

जे.के. मोड, होलीथड़ा, कांकरोली, जिला-राजसमंद

जयवर्द्धन NEWS

राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए

YouTube Channel Jaivardhan News

आजादी की 74 वीं वर्षगांठ

स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं

ग्राम विकास अधिकारी,
उपसरपंच, समस्त वार्डपंच एवं ग्रामवासी

कोरोना से घबराएं नहीं सावधानी बरतें

मास्क को हटाने के बाद अपने हाथों को साबुन और पानी या अल्कोहल युक्त हैंड रब से धोएं। एक बार उपयोग किये मास्क का पुनः प्रयोग न करें। प्रयोग किए गए मास्क को कीटाणु रहित कर बंद कूड़ेदान में डाल दें। मास्क को पहनने के बाद मास्क को छूने से बचें। मास्क को गर्दन पर लटकता हुआ ना छोड़ें।

देवेन्द्रसिंह चारण
सरपंच
ग्रा.पं. खाखरमाला

- केंद्र और राज्य सरकार की गाइडलाइन का पालन करें।
- जितना हो सके अपना काम अपने घर से करें।
- यदि कोई सर्जरी जरूरी नहीं हो तो उसे भी टाल दें।
- 'हम स्वस्थ तो जग स्वस्थ' मंत्र अपनाएं।
- भीड़ में न जाने का संकल्प लें।
- वृद्धजन-घर से बाहर न निकले।
- सामाज्य चेकअप के लिए उर से निकलने से बचे।
- खतरे में भी लोगों की सेवा में लगे सभी लोगों को आभार व्यक्त करें।

ग्राम पंचायत खाखरमाला, पंचायत समिति आमेट, जिला-राजसमंद

आजादी की 74 वीं वर्षगांठ

स्वतंत्रता दिवस

की हार्दिक शुभकामनाएं

संदीप श्रीमाली
सरपंच

गिरधारीसिंह
ग्राम विकास अधिकारी

श्रीमती हीरा कुंवर
उप सरपंच

वार्डपंच :- मंजु देवी, मदनलाल राव, मोनू सोनी, मेहुल श्रीमाली, किशोरसिंह, प्रतापसिंह, लक्ष्मीदेवी, दौलतराम गमेती, मोहनसिंह, विद्या सुथार एवं समस्त ग्रामवासी

मास्क को हटाने के बाद अपने हाथों को साबुन और पानी या अल्कोहल युक्त हैंड रब से धोएं। एक बार उपयोग किये मास्क का पुनः प्रयोग न करें। प्रयोग किए गए मास्क को कीटाणु रहित कर बंद कूड़ेदान में डाल दें। मास्क को पहनने के बाद मास्क को छूने से बचें। मास्क को गर्दन पर लटकता हुआ ना छोड़ें।

अपील

- जन्म मृत्यु व विवाह का पंजीयन अवश्य करवाएं।
- बिजली व पानी बचाएं व ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाऐं।
- ग्राम सभा में भाग लेवे, शिक्षा को बढ़ावा देवें।
- श्रमिक कार्ड, भामाशाह एवं आधार कार्ड बनवाएं।
- कैशलेस कार्य प्रणाली को अपनाएं
- कूड़ा-करकट कचरा पात्र में ही डालें, गांव को साफ सुथरा बनाऐं।
- गांव को साफ-सुथरा बनाएं एवं पॉलिथीन का प्रयोग न करें।
- पूरे गांव को जल विषय पर आत्मनिर्भर बनाना।
- भामाशाह एवं प्रधानमंत्री जनधन योजना का लाभ उठाएं।

ग्राम पंचायत सेमा पंचायत समिति खमनोर

vedanta
transforming elements

HINDUSTAN ZINC

#आत्मनिर्भरभारत #देशकीजरूरतोंकेलिए

आप सभी को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

आज़ादी के इस पर्व पर देश की आर्थिक मजबूती का संकल्प लें, आत्मनिर्भरता की ओर बढ़े।
सोशल डिस्टेंनसिंग एवं स्वच्छता का पालन कर कोरोना से मुक्ति पायें।

Hindustan Zinc Limited
Yashad Bhawan | Near Swaroop Sagar | Udaipur - 313004 | Rajasthan | India
P : +91 294-6604000-02 | www.hzlindia.com | CIN - L27204RJ1966PLC001208
www.facebook.com/HindustanZinc | www.twitter.com/CEO_HZL | www.twitter.com/Hindustan_Zinc | www.linkedin.com/companyhindustanzinc

जयवर्द्धन

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,
जिला-राजसमंद, 9414239648, 96729 94705
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

To